127वाँ संस्करण

अक्तूबर 2025

मन की बात

वंदे मातरम्

स्वतंत्रता के गीत से भविष्य के संकल्प तक

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का सम्बोधन

प्रधानमंत्री का सन्देश

सूची क्रम

मुख्य आलेख

20 **छठ** : आस्था का उत्सव

28 **हम ही परिवर्तन** : सक्रिय सामुदायिक भागीदारी

42 **सरदार वल्लभभाई पटेल** : दृढ़ इच्छाशक्ति के प्रतीक

54 **माँ भारती की वाणी** : वंदे मातरम् के 150 वर्ष

66 **संस्कृत का पुनर्जागरण** : प्राचीन भाषा में नई जान फूँकती युवा आवाज़ें

संक्षेप में

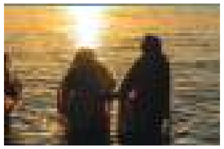

24 छठ की भावना

36 **जन अभियान** : परिवर्तन के वाहक बने नागरिक

46 खेड़ा सत्याग्रह और बोरसद सत्याग्रह

52 कोरापुट कॉफी और इसका उत्तम मिश्रण

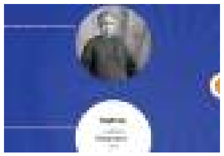
62 **वंदे मातरम्** : एक ऐतिहासिक यात्रा

लेख

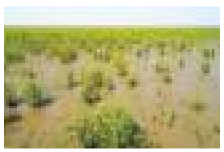
32 मैंग्रोव प्रभाव – अर्जुनभाई मोढवाडिया

38 **भारतीय नस्लें, अविश्वसनीय कारनामे:** भारत में स्वदेशी K9 क्रांति में अग्रणी सीमा सुरक्षा बल – डॉ. शमशेर सिंह

48 **कॉफी** : भारत में निर्मित, दुनिया भर में प्रिय – एम.जे. दिनेश

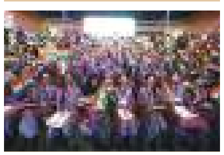
58 **'वंदे मातरम्'** : स्वाधीनता का अचूक मंत्र – रूपा गुप्ता

70 कोमाराम भीम और भगवान बिरसा मुंडा की विरासत को नमन – जुएल ओराम

75 **प्रतिक्रियाएँ**

मेरे प्यारे देशवासियो
नमस्कार

'मन की बात' में आप सब का स्वागत है। **पूरे देश में इस समय त्योहारों का उल्लास है। हम सबने कुछ दिन पहले दीपावली मनाई है और अभी बड़ी संख्या में लोग छठ पूजा में व्यस्त हैं।** घरों में ठेकुआ बनाया जा रहा है। जगह-जगह घाट सज रहे हैं। बाज़ारों में रौनक है। **हर तरफ श्रद्धा, अपनापन और परम्परा का संगम दिख रहा है।** छठ का व्रत रखने वाली महिलाएँ जिस समर्पण और निष्ठा से इस पर्व की तैयारी करती हैं वो अपने-आप में बहुत प्रेरणादायक है।

साथियो, छठ का महापर्व संस्कृति, प्रकृति और समाज के बीच की गहरी एकता का प्रतिबिम्ब है। छठ के घाटों पर समाज का हर वर्ग एक साथ खड़ा होता है। ये दृश्य भारत की सामाजिक एकता का सबसे सुंदर उदाहरण है। आप देश और दुनिया के किसी भी कोने में हों, यदि मौका मिले, तो छठ उत्सव में जरूर हिस्सा लें। एक अनोखे अनुभव को खुद महसूस करें। मैं छठी मैया

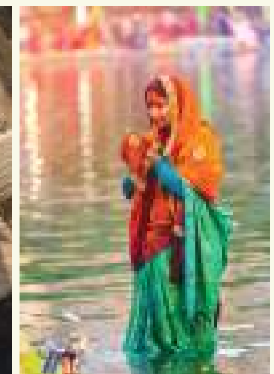

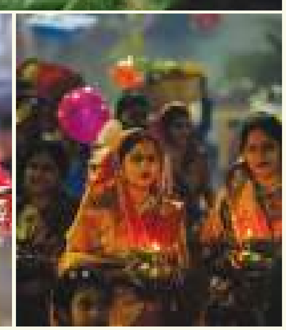

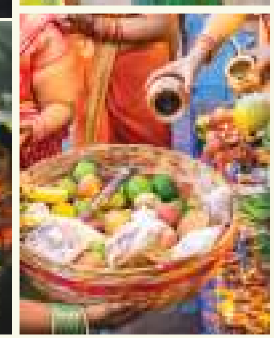

को नमन करता हूँ। **सभी देशवासियों को, विशेषकर बिहार, झारखंड और पूर्वांचल के लोगों को छठ महापर्व की शुभकामनाएँ देता हूँ।**

साथियो, त्योहारों के इस अवसर पर मैंने आप सभी के नाम एक पत्र लिखकर अपनी भावनाएँ साझा की थी। मैंने चिट्ठी में देश की उन उपलब्धियों के बारे में बताया था जिससे इस बार त्योहारों की रौनक पहले से ज़्यादा हो गई है। मेरी चिट्ठी के जवाब में मुझे देश के अनेक नागरिकों ने अपने संदेश भेजे हैं। **वाकई 'ऑपरेशन सिंदूर' ने हर भारतीय को गर्व से भर दिया है। इस बार उन इलाकों में भी खुशियों के दीप जलाए गए, जहाँ कभी माओवादी आतंक का अंधेरा छाया रहता था।** लोग उस माओवादी आतंक का जड़ से खात्मा चाहते हैं जिसने उनके बच्चों का भविष्य संकट में डाल दिया था।

GST बचत उत्सव को **लेकर भी लोगों में बहुत उत्साह है। इस बार त्योहारों में एक और सुखद बात देखने को मिली। बाज़ारों में स्वदेशी सामानों की खरीदारी ज़बरदस्त तरीके से बढ़ी है।** लोगों ने मुझे जो संदेश भेजे हैं, उसमें बताया है कि इस बार उन्होंने किन स्वदेशी चीज़ों की खरीदारी की है।

साथियो, मैंने अपने पत्र में खाने के तेल में 10 प्रतिशत की कमी करने का भी आग्रह किया था, इस पर भी लोगों ने बहुत सकारात्मक रुख़ दिखाया है।

साथियो, स्वच्छता और स्वच्छता के प्रयास, इस पर भी मुझे ढ़ेर सारे संदेश मिले हैं। मैं आपसे देश के तीन अलग-अलग शहरों की ऐसी गाथाएँ साझा करना चाहता हूँ जो बहुत प्रेरणादायक हैं। छत्तीसगढ़ के अम्बिकापुर में शहर से प्लास्टिक कचरा साफ़ करने के लिए एक अनोखी पहल की गई है। अम्बिकापुर में Garbage Cafe चलाए जा रहे हैं। ये ऐसे cafe हैं, जहाँ प्लास्टिक कचरा लेकर जाने पर भरपेट खाना खिलाया जाता है। अगर कोई व्यक्ति एक किलो प्लास्टिक लेकर जाए, उसे दोपहर या रात का खाना मिलता है और कोई आधा

किलो प्लास्टिक ले जाए तो नाश्ता मिल जाता है। ये cafe अम्बिकापुर म्युनिसिपल कॉरपोरेशन चलाता है।

साथियो, इसी तरह का कमाल बेंगलुरु में इंजीनियर कपिल शर्मा जी ने किया है। बेंगलुरु को 'झीलों का शहर' कहा जाता है और कपिल जी ने यहाँ झीलों को नया जीवन देने का अभियान शुरू किया है। कपिल जी की टीम ने बेंगलुरु और आसपास के इलाकों में 40 कुँओं और 6 झीलों को फिर से ज़िंदा कर दिया है। खास बात तो ये है कि उन्होंने अपने mission में corporates और स्थानीय लोगों को भी जोड़ा है। उनकी संस्था पेड़ लगाने के अभियान से भी जुड़ी है।

साथियो, अम्बिकापुर और बेंगलुरु, ये प्रेरक उदाहरण बताते हैं कि जब ठान लिया जाए तो बदलाव भी आकर के ही रहता है।

साथियो, बदलाव के एक और प्रयास का उदाहरण, मैं आपसे साझा करना चाहता हूँ। आप सब जानते हैं जैसे पहाड़ों पर और मैदानी इलाकों में जंगल होते हैं, ये जंगल मिट्टी को बाँधे रहते हैं, कुछ वैसी ही अहमियत समंदर के किनारे mangrove की होती है। Mangrove समुद्र के खारे पानी और दलदली ज़मीन में उगते हैं और समुद्री eco-system का एक अहम हिस्सा होते हैं। सुनामी या cyclone जैसी आपदा आने पर ये Mangrove बहुत मददगार साबित होते हैं।

साथियो, गुजरात के वन विभाग ने Mangrove के इस महत्त्व को समझते हुए खास मुहिम चलाई हुई है। 5 साल पहले वन विभाग की टीमों ने अहमदाबाद

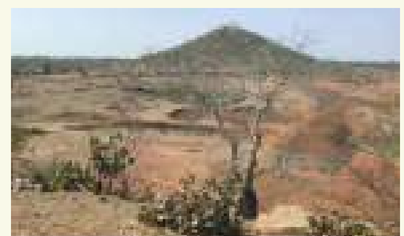

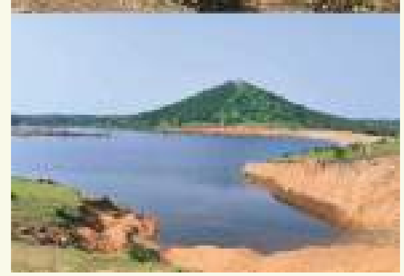

के नज़दीक धोलेरा में Mangrove लगाने का काम शुरू किया था, और आज, धोलेरा तट पर साढ़े तीन हज़ार हेक्टेयर में Mangrove फैल चुके हैं। इन Mangrove का असर आज पूरे क्षेत्र में देखने को मिल रहा है। वहाँ के eco system में dolphins की संख्या बढ़ गई है। केकड़े और दूसरे जलीय जीव भी पहले से ज़्यादा हो गए हैं। यही नहीं, अब यहाँ प्रवासी पक्षी भी काफी संख्या में आ रहे हैं। इससे वहाँ के पर्यावरण पर अच्छा प्रभाव तो पड़ा ही है, धोलेरा के मछली पालकों को भी फायदा हो रहा है।

साथियो, धोलेरा के अलावा गुजरात के कच्छ में भी इन दिनों Mangrove Plantation बहुत जोरों पर हो रहा है, वहाँ कोरी क्रीक में, 'Mangrove Learning Centre' भी बनाया गया है।

साथियो, पेड़-पौधों की, वृक्षों की यही तो खासियत होती है। जगह चाहे कोई भी हो, वो हर जीव मात्र की बेहतरी के लिए काम आते हैं। इसीलिए तो हमारे ग्रंथों में कहा गया है–

धन्या महीरूहा येभ्यो,
निराशां यान्ति नार्थिनः।।

अर्थात् वो वृक्ष और वनस्पतियाँ धन्य हैं, जो किसी को भी निराश नहीं करते। हमें भी चाहिए, हम जिस भी इलाके में रहते हैं, पेड़ अवश्य लगाएँ। 'एक पेड़ माँ के नाम' के अभियान को हमें और आगे बढ़ाना है।

मेरे प्यारे देशवासियो, क्या आप जानते हैं कि 'मन की बात' में हम जिन विषयों पर चर्चा करते हैं, उनमें मेरे लिए सबसे संतोष की बात क्या होगी? तो मैं इस बारे में यही कहूँगा कि 'मन की बात' में हम जिन विषयों की चर्चा करते हैं, उनसे लोगों को समाज के लिए कुछ अच्छा, कुछ Innovative करने की प्रेरणा मिलती है। इससे हमारी संस्कृति, हमारे देश के कई पहलू उभरकर सामने आते हैं।

साथियो, आपमें से बहुतों को याद होगा कि करीब पाँच वर्ष पहले मैंने इस कार्यक्रम में भारतीय नस्ल के 'श्वान' यानी dogs की चर्चा की थी। मैंने देशवासियों के साथ ही अपने सुरक्षा बलों से आग्रह किया था कि वे भारतीय नस्ल के Dogs को अपनाएँ, क्योंकि वो हमारे परिवेश और परिस्थितियों के अनुरूप ज़्यादा आसानी से ढल जाते हैं। मुझे ये बताते हुए खुशी हो रही है कि हमारी सुरक्षा एजेंसियों ने इस दिशा में काफी सराहनीय प्रयास किए हैं। **BSF और CRPF ने अपने दस्तों में भारतीय नस्ल के Dogs की संख्या बढ़ाई है। Dogs की training के लिए BSF का National Training Centre ग्वालियर के टेकनपुर में है। यहाँ उत्तर प्रदेश के रामपुर हाउंड, कर्नाटक और महाराष्ट्र के मुधोल हाउंड, इस पर विशेष रूप से focus किया जा रहा है।** इस Centre पर trainers technology और innovation की मदद से श्वानों को बेहतर तरीके से train कर रहे हैं। **भारतीय नस्ल वाले Dogs के लिए Training Manuals को फिर से लिखा गया है ताकि उनकी unique strengths को सामने लाया जा सके। बेंगलुरु में CRPF के Dog Breeding and training school में मोंग्रेल्स, मुधोल हाउंड, कोम्बाई और पांडिकोना जैसे भारतीय श्वानों को train किया जा रहा है।**

साथियो, पिछले वर्ष लखनऊ में **All India Police Duty Meet** का आयोजन हुआ था। उस समय, रिया नाम की श्वान ने लोगों का ध्यान अपनी ओर खींचा था। यह एक मुधोल हाउंड है जिसे **BSF** ने **Train** किया है। रिया ने यहाँ कई **Foreign Breeds** को पछाड़ते हुए पहला पुरस्कार जीता।

साथियो, अब **BSF** ने अपने **Dogs को विदेशी नामों के बजाय भारतीय नाम देने की परम्परा शुरू की है।** हमारे यहाँ के देशी श्वान ने अद्भुत साहस भी दिखाया है। पिछले वर्ष, छतीसगढ़ के माओवाद से प्रभावित रहे क्षेत्र में गश्त के दौरान CRPF के एक देसी श्वान ने 8 किलोग्राम विस्फोटक का पता लगाया था। **BSF और CRPF ने इस दिशा में जो प्रयास किए हैं, उसके लिए मैं उन्हें बधाई देता हूँ। वैसे मुझे 31 October का भी इंतजार है। यह लौहपुरुष सरदार पटेल की जयंती का दिन है।** इस अवसर पर हर वर्ष गुजरात के एकता नगर में 'Statue of Unity' के समीप विशेष समारोह आयोजित किए जाते हैं। यहीं पर एकता दिवस परेड भी होती है और इस परेड में फिर से भारतीय श्वानों के सामर्थ्य का प्रदर्शन होगा। आप भी, मौका निकाल कर इसे ज़रूर देखिएगा।

मेरे प्यारे देशवासियो, सरदार **पटेल जी की 150वीं जयंती का दिन पूरे देश के लिए एक बहुत विशेष अवसर है। सरदार पटेल आधुनिक काल में राष्ट्र की सबसे महान विभूतियों में से एक रहे हैं। उनके विराट व्यक्तित्व में अनेक गुण एक साथ समाहित थे।** वे एक अत्यंत प्रतिभाशाली छात्र रहे। उन्होंने भारत और ब्रिटेन दोनों ही जगह पढ़ाई में बेहतरीन प्रदर्शन किया। वे अपने समय के सबसे सफल वकीलों में से भी एक थे। वो वकालत में और नाम कमा सकते थे, लेकिन गाँधी जी से प्रेरित होकर उन्होंने खुद को स्वतंत्रता आंदोलन में पूरी तरह समर्पित कर दिया। **'खेड़ा सत्याग्रह' से लेकर 'बोरसद सत्याग्रह' तक अनेक आंदोलनों में उनके योगदान को आज भी याद किया जाता है।** अहमदाबाद Municipality के प्रमुख के रूप में उनका कार्यकाल भी ऐतिहासिक रहा था। **उन्होंने स्वच्छता और सुशासन को सर्वोच्च प्राथमिकता दी। उप प्रधानमंत्री और गृहमंत्री के रूप में उनके योगदान के लिए हम सभी सदैव उनके ऋणी रहेंगे।**

साथियो, सरदार पटेल ने भारत **के bureaucratic framework की एक मज़बूत नींव भी रखी।** देश की एकता और अखंडता के लिए उन्होंने अद्वितीय प्रयास किए। मेरा आप सबसे आग्रह है, 31 अक्तूबर को सरदार साहब की जयंती देश भर में होने वाली Run For Unity में आप भी ज़रूर शामिल हों – और अकेले नहीं, सबको साथ लेकर के शामिल हों। एक प्रकार से युवा चेतना का ये अवसर बनना चाहिए, एकता की दौड़, एकता को मज़बूती देगी। ये उस महान विभूति के प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि है, जिन्होंने भारत को एकता के सूत्र में पिरोया था।

मेरे प्यारे देशवासियो, चाय के साथ मेरा जुड़ाव तो आप सभी जानते ही हैं, लेकिन आज मैंने सोचा कि 'मन की बात' में क्यों न कॉफी पर चर्चा की जाए। आपको याद होगा, बीते साल हमने 'मन की बात' में अराकू कॉफी पर बात की थी। कुछ समय पहले ओडिशा के कई लोगों ने मुझसे कोरापुट कॉफी को लेकर भी अपनी भावनाएँ साझा की। उन्होंने मुझे पत्र लिखकर कहा कि 'मन की बात' में कोरापुट कॉफी पर भी चर्चा हो।

साथियो, मुझे बताया गया है कि कोरापुट कॉफी का स्वाद गजब होता है, और इतना ही नहीं, स्वाद तो स्वाद, कॉफी की खेती भी लोगों को फायदा पहुँचा रही है। कोरापुट में कुछ लोग ऐसे भी हैं, जो अपने passion की वजह से कॉफी की खेती कर रहे हैं। corporate world में अच्छी-खासी नौकरी करते थे, लेकिन वो कॉफी को इतना पसंद करते हैं कि इस field में आ गए और अब सफलता से इसमें काम कर रहे हैं। **ऐसी कई महिलाएँ भी हैं, जिनके जीवन में कॉफी से सुखद बदलाव हुआ है। कॉफी से उन्हें सम्मान और समृद्धि, दोनों हासिल हुई है। सच ही कहा गया है :**

कोरापुट कॉफी अत्यंत सुस्वादु।
एहा ओडिशार गौरव।

साथियो, दुनिया भर में भारत की कॉफी बहुत लोकप्रिय हो रही है। चाहे कर्नाटक में चिकमंगलुरु, कुर्ग और हासन हो। तमिलनाडु में पुलनी, शेवरॉय, नीलगिरी और अन्नामलाई के इलाके हों, कर्नाटक-तमिलनाडु सीमा पर बिलिगिरि क्षेत्र हो या फिर केरला में वायनाड, त्रावणकोर और मालाबार के इलाके - भारत की कॉफी की diversity देखते ही बनती है। मुझे बताया गया है कि हमारा north-east भी coffee cultivation में आगे बढ़ रहा है। इससे भारतीय कॉफी की पहचान दुनिया भर में और मजबूत हो रही है- तभी तो कॉफी को पसंद करने वाले कहते हैं :

India's coffee is coffee at its finest.

It is brewed in India and loved by the World.

मेरे प्यारे देशवासियो, अब 'मन की बात' में एक ऐसे विषय की बात, जो हम सबके दिलों के बेहद करीब है। ये विषय है हमारे राष्ट्र गीत का- भारत का राष्ट्र गीत यानी 'वंदे मातरम्'। एक ऐसा गीत, जिसका पहला शब्द ही हमारे हृदय में भावनाओं का उफान ला देता है। 'वंदे मातरम्' इस एक शब्द में कितने ही भाव हैं, कितनी ऊर्जाएँ हैं। सहज भाव में ये हमें माँ भारती के वात्सल्य का अनुभव कराता है। **यही हमें माँ भारती की संतानों के रूप में अपने दायित्वों का बोध कराता है। अगर कठिनाई का समय होता है तो 'वंदे मातरम्' का उद्घोष 140 करोड़ भारतीयों को एकता की ऊर्जा से भर देता है।**

साथियो, राष्ट्रभक्ति, माँ भारती से प्रेम, यह अगर शब्दों से परे की भावना है तो 'वंदे मातरम्' उस अमूर्त भावना को साकार स्वर देने वाला गीत है। इसकी रचना बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय जी ने **सदियों की गुलामी से शिथिल हो चुके भारत में नए प्राण फूँकने के लिए की थी।** 'वंदे मातरम्' भले ही 19वीं शताब्दी में लिखा गया था लेकिन इसकी भावना भारत की हज़ारों वर्ष पुरानी अमर चेतना से जुड़ी थी। वेदों ने जिस भाव को 'माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः' कहकर भारतीय सभ्यता की नींव रखी थी, बंकिमचंद्र जी ने 'वंदे मातरम्' लिखकर मातृभूमि और उसकी संतानों के उसी रिश्ते को भाव विश्व में एक मंत्र के रूप में बाँध दिया था।

साथियो, आप सोच रहे होंगे कि मैं अचानक से वंदे मातरम् की इतनी बातें क्यों कर रहा हूँ। **दरअसल कुछ ही दिनों बाद, 7 नवम्बर को हम 'वंदे मातरम्' के 150वें वर्ष के उत्सव में प्रवेश करने वाले हैं। 150 वर्ष पूर्व 'वंदे मातरम्' की रचना हुई थी और 1896 (अट्ठारह सौ छियानवे) में गुरुदेव रबीन्द्रनाथ टैगोर ने पहली बार इसे गाया था।**

साथियो, 'वंदे मातरम्' के गान में करोड़ों देशवासियों ने हमेशा राष्ट्र प्रेम के अपार उफान को महसूस किया है। हमारी पीढ़ियों ने 'वंदे मातरम्' के शब्दों में भारत के एक जीवंत और भव्य स्वरूप के दर्शन किए हैं।

सुजलाम्, सुफलाम्, मलयज शीतलाम्,
शस्यश्यामलाम्, मातरम्!
वंदे मातरम्!

हमें ऐसा ही भारत बनाना है। 'वंदे मातरम्' हमारे इन प्रयासों में हमेशा हमारी प्रेरणा बनेगा। इसलिए हमें 'वंदे मातरम्' के 150वें वर्ष को भी यादगार बनाना है। आने वाली पीढ़ी के लिए ये संस्कार सरिता को हमें आगे बढ़ाना है। आने वाले समय में 'वंदे मातरम्' से जुड़े **कई कार्यक्रम होंगे, देश में कई आयोजन होंगे। मैं चाहूँगा, हम सब देशवासी 'वंदे मातरम्' के गौरवगान के लिए स्वतः स्फूर्त भावना से भी प्रयास करें।** आप मुझे अपने सुझाव #VandeMatram150 के साथ ज़रूर भेजिए। #VandeMatram150। मुझे आपके सुझावों का इंतज़ार रहेगा और हम सब इस अवसर को ऐतिहासिक बनाने के लिए काम करेंगे।

मेरे प्यारे देशवासियो, संस्कृत का नाम सुनते ही हमारे मन-मस्तिष्क में आता है - हमारे 'धर्मग्रंथ', 'वेद', 'उपनिषद', 'पुराण', शास्त्र, प्राचीन ज्ञान-विज्ञान, अध्यात्म और दर्शन। लेकिन एक समय, इन सबके साथ-साथ 'संस्कृत' बातचीत की भी भाषा थी। उस युग में अध्ययन और शोध संस्कृत में ही किए जाते थे। नाट्य मंचन भी संस्कृत में होते थे। लेकिन दुर्भाग्य से गुलामी के कालखंड में भी और आज़ादी के बाद भी संस्कृत लगातार उपेक्षा का शिकार हुई। इस वजह से युवा पीढ़ियों में संस्कृत के प्रति आकर्षण भी कम होता चला गया। लेकिन साथियो, अब समय बदल रहा है, तो संस्कृत का भी समय बदल रहा है। संस्कृति और Social Media की दुनिया ने संस्कृत को नई प्राणवायु दे दी है। इन दिनों कई युवा संस्कृत को लेकर बहुत रोचक काम कर रहे हैं। आप Social Media पर जाएँगे तो आपको ऐसी कई Reels दिखेंगी जहाँ कई युवा संस्कृत में, और संस्कृत के बारे में बात करते दिखाई देंगे। कई लोग तो अपने Social Media Channel के ज़रिए संस्कृत सिखाते भी हैं। ऐसे ही एक युवा Content Creator हैं – भाई यश सालुंड्के। यश की खास बात ये है कि वो Content Creator भी हैं और क्रिकेटर भी हैं। संस्कृत में बात करते हुए क्रिकेट खेलने की

उनकी Reel लोगों ने खूब पसंद की है। आप सुनिए –

साथियो, कमला और जाह्नवी, इन दो बहनों का काम भी शानदार है। ये दोनों बहनें अध्यात्म, दर्शन और संगीत पर Content बनाती हैं। Instagram पर एक और युवा का चैनल है 'संस्कृत छात्रोहम्'। इस चैनल को चलाने वाले युवा साथी संस्कृत से जुड़ी जानकारियाँ तो देते ही हैं, वो संस्कृत में हास-परिहास के Video भी बनाते हैं। युवा संस्कृत में ये Video भी खूब पसंद करते हैं। आप में से कई साथियो ने समष्टि के Videos भी देखे होंगे। समष्टि संस्कृत में अपने गानों को अलग-अलग तरह से प्रस्तुत करती है। एक और युवा हैं 'भावेश भीमनाथनी'। भावेश संस्कृत श्लोकों, आध्यात्मिक दर्शन और सिद्धांतों के बारे में बात करते हैं।

साथियो, भाषा किसी भी सभ्यता के मूल्यों और परम्पराओं की वाहक होती है। संस्कृत ने ये कर्तव्य हज़ारों वर्षों तक निभाया है। ये देखना सुखद है कि अब संस्कृत के लिए भी कुछ युवा अपना कर्तव्य निभा रहे हैं।

मेरे प्यारे देशवासियो, अब मैं आपको ज़रा Flashback में लेकर चलूँगा। आप कल्पना करिए, 20वीं सदी का शुरुआती कालखंड! तब दूर-दूर तक आज़ादी की कहीं कोई उम्मीद नज़र नहीं आ रही थी। **पूरे भारत में अंग्रेजों ने शोषण की सारी सीमाएँ लांघ दी थी और उस दौर में हैदराबाद के देशभक्त लोगों के लिए दमन का दौर और भी भयावह था। वे क्रूर और निर्दयी निज़ाम के अत्याचारों को भी झेलने को मजबूर थे।** गरीबों, वंचितों और आदिवासी समुदायों पर तो अत्याचार की कोई सीमा ही नहीं थी। उनकी ज़मीनें छीन ली जाती थीं, साथ ही भारी टैक्स भी लगाया जाता था। अगर वे इस अन्याय का विरोध करते, तो उनके हाथ तक काट दिए जाते थे।

साथियो, ऐसे कठिन समय में करीब बीस साल का एक नौजवान इस अन्याय के खिलाफ खड़ा हुआ था। आज एक खास वजह से मैं उस नौजवान की चर्चा कर रहा हूँ। उसका नाम बताने

से पहले मैं उसकी वीरता की बात आपको बताऊँगा। **साथियो, उस दौर में जब निज़ाम के खिलाफ एक शब्द बोलना भी गुनाह था, उस नौजवान ने सिद्दीकी नाम के निज़ाम के एक अधिकारी को खुली चुनौती दे दी थी।** निज़ाम ने सिद्दीकी को किसानों की फसलें ज़ब्त करने के लिए भेजा था। लेकिन अत्याचार के खिलाफ इस संघर्ष में उस नौजवान ने सिद्दीकी को मौत के घाट उतार दिया। वो गिरफ़्तारी से बच निकलने में भी कामयाब रहा। निज़ाम की अत्याचारी पुलिस से बचते हुए वो नौजवान वहाँ से सैकड़ों किलोमीटर दूर असम जा पहुँचा।

साथियो, मैं जिस महान विभूति की चर्चा कर रहा हूँ- उनका नाम है कोमरम भीम। अभी 22 अक्तूबर को ही उनकी जन्म जयंती मनाई है। कोमरम भीम की आयु बहुत लम्बी नहीं रही, वो महज 40 वर्ष ही जीवित रहे लेकिन अपने जीवन-

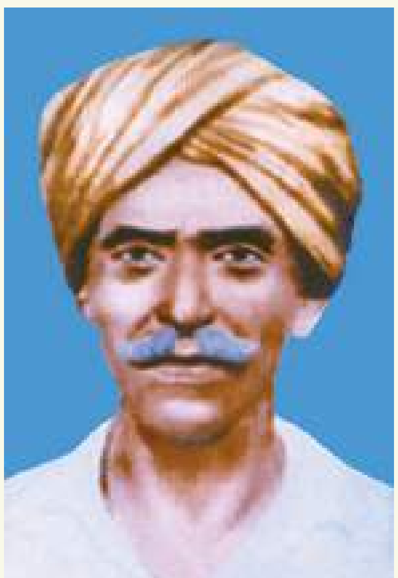

काल में उन्होंने अनगिनत लोगों, विशेषकर आदिवासी समाज के हृदय में अमिट छाप छोड़ी। उन्होंने निज़ाम के खिलाफ संघर्ष कर रहे लोगों में नई ताकत भरी। वे अपने रणनीतिक कौशल के लिए भी जाने जाते थे। निज़ाम की सत्ता के लिए वे बहुत बड़ी चुनौती बन गए थे। 1940 में निज़ाम के लोगों ने उनकी हत्या कर दी थी। युवाओं से मेरा आग्रह है कि वे उनके बारे में अधिक से अधिक जानने का प्रयास करें।

कोमरम भीम की
ना विनम्र निवाली।
आयन प्रजल हृदयाल्लों...
एप्पटिकी निलिचि-वूँटारू।

साथियो, अगले महीने की 15 तारीख को हम 'जनजातीय गौरव दिवस' मनाएँगे। यह भगवान बिरसा **मुंडा जी की जयंती का सुअवसर है। मैं भगवान बिरसा मुंडा जी को श्रद्धापूर्वक नमन करता हूँ। देश की आज़ादी के लिए, आदिवासी समुदाय के अधिकारों के लिए, उन्होंने जो काम किया वो अतुलनीय है।** मेरे लिए ये सौभाग्य की

बात है कि मुझे झारखंड में भगवान बिरसा मुंडा जी के गाँव उलिहातु जाने का अवसर मिला था। मैंने वहाँ की माटी को माथे पर लगाकर प्रणाम किया था। भगवान बिरसा मुंडा जी और कोमारम भीम जी की तरह ही हमारे आदिवासी समुदायों में कई और विभूतियाँ हुई हैं। मेरा आग्रह है कि आप उनके बारे में अवश्य पढ़ें।

मेरे प्यारे देशवासियो, 'मन की बात' के लिए मुझे आपके भेजे हुए ढ़ेरों संदेश मिलते हैं। कई लोग इन संदेशों में अपने आस-पास के प्रतिभाशाली लोगों के बारे में चर्चा करते हैं। मुझे पढ़कर बहुत खुशी होती है कि हमारे छोटे शहरों, कस्बों, गाँवों में भी innovative ideas पर काम हो रहे हैं। अगर आप ऐसे व्यक्ति या समूहों को जानते हैं, जो सेवा की भावना से समाज को बदलने में जुटे हैं, तो मुझे ज़रूर बताइए। मुझे आपके संदेशों का हमेशा की तरह इंतज़ार रहेगा। अगले महीने, हम, 'मन की बात' के एक और episode में मिलेंगे, कुछ नए विषयों के साथ मिलेंगे, तब तक के लिए मैं विदाई लेता हूँ।

आप सबका बहुत-बहुत धन्यवाद। नमस्कार।

'मन की बात' सुनने के लिए QR कोड स्कैन करें।

मन की बात

प्रधानमंत्री द्वारा विशेष उल्लेख

छठ

आस्था का उत्सव

छठ पूजा सूर्य देव और उनकी पत्नी को समर्पित एक महत्त्वपूर्ण हिन्दू त्योहार है। मुख्य रूप से बिहार, झारखंड, पूर्वी उत्तर प्रदेश और पड़ोसी देश नेपाल में मनाया जाने वाला यह त्योहार भारत की सांस्कृतिक दृढ़ता, सामाजिक एकता और पारिस्थितिक चेतना का एक गहन प्रमाण है। चार दिन के इस कठोर अनुष्ठान में पवित्र स्नान, उपवास, निर्जला व्रत, जल में खड़े रहना और डूबते तथा उगते सूर्य को अर्घ्य देना शामिल है।

यह त्योहार क्षेत्रीय कैलेंडर के अनुसार वर्ष में दो बार – कार्तिक (अक्तूबर/नवम्बर) और चैत्र (मार्च/अप्रैल) के महीने में मनाया जाता है। यह छठे दिन (षष्ठी) मनाया जाता है और फसल कटाई के बाद के मौसम से जुड़ा हुआ है। उन समाजों में जो मुख्य रूप से कृषि प्रधान थे और जीवन तथा जीविका के लिए सूर्य पर निर्भर थे, सूर्य की पूजा न केवल व्यक्तिगत रूप से बल्कि सामुदायिक रूप में भी की जाने लगी। सुबह का अर्घ्य भरपूर फसल, शांति और समृद्धि के लिए आभार व्यक्त करता है, जबकि शाम का अर्घ्य सूर्य देव की कृपा का आभार व्यक्त करता है।

ये अनुष्ठान सरल तथा सीधे होते हैं और पुरोहितों के बिना संपन्न होते हैं। प्रसाद सूपी से चढ़ाया जाता है और प्रार्थनाएँ सीधे डूबते और उगते सूर्य को अर्पित की जाती हैं। त्योहार की शुरुआत नदी के घाटों और छोटे जलाशयों की सावधानीपूर्वक सफाई से होती है, जो अक्सर सरकार और समुदायों द्वारा की जाती है। शुद्धता पर यह ज़ोर, त्योहार के अंतर्निहित पर्यावरण–अनुकूल स्वरूप को रेखांकित करता है। अनुष्ठानों में प्रयुक्त सभी वस्तुएँ–प्रसाद से लेकर खाना पकाने के बर्तनों तक स्थानीय और प्राकृतिक रूप से प्राप्त की जाती हैं। प्रसाद में आमतौर पर मिठाइयाँ, चावल और गुड़ का खीर, ठेकुआ (गुड़ से मीठा किया जाने वाला गेहूँ का एक सख्त केक), चावल के लड्डू, गन्ना, मौसम्बी तथा केला जैसे फल, साथ ही सूती धागा, सुपारी और हल्दी जैसी वस्तुएँ शामिल होती हैं। भोजन पारम्परिक मिट्टी के चूल्हे

पर आम की लकड़ी का उपयोग करके तैयार किया जाता है और केवल कांसे या मिट्टी के बर्तनों का उपयोग किया जाता है। व्रत के दौरान खाए जाने वाले शुद्ध शाकाहारी व्यंजनों में पत्तेदार सब्जियाँ, कद्दू और मूली शामिल हैं, जिन्हें बिना नमक, प्याज या लहसुन के तैयार किया जाता है जिससे शुद्ध और सात्विक गुण बरकरार रहते हैं।

छठ पूजा अपने आध्यात्मिक और पर्यावरणीय आयामों से परे, जाति, वर्ग और पंथ की बाधाओं को पार करते हुए, एक शक्तिशाली सामाजिक समानता का पर्व है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने अपने 127वें 'मन की बात' सम्बोधन में इस पर्व को 'भक्ति, स्नेह और परम्परा का संगम' बताया है। घाटों पर, समाज का हर वर्ग एक साथ आता है, जिससे सामाजिक एकता का एक सूक्ष्म रूप बनता है। पारम्परिक प्रसाद तैयार करना एक सामुदायिक गतिविधि है, जो साझा करने और सामूहिक ज़िम्मेदारी की भावना को बढ़ावा देती है। एक जैसे पारम्परिक परिधान पहने और एक साथ प्राचीन भजन गाते हुए हज़ारों भक्तों का दृश्य सामाजिक एकता की शक्तिशाली तस्वीर प्रस्तुत करता है।

इस पर्व में महिलाओं की भूमिका केंद्रीय है। वे अपने परिवार की दीर्घायु और समृद्धि के लिए निर्जला व्रत, यानी बिना पानी के उपवास रखती हैं। उनका समर्पण केवल एक धार्मिक दायित्व नहीं बल्कि स्नेह और त्याग की गहन अभिव्यक्ति है, जो पारिवारिक बंधनों को सुदृढ़ करता है और नारीत्व की सांस्कृतिक शक्ति को प्रदर्शित करता है। बुनिया बारी जैसे अनोखे अनुष्ठान, जहाँ छोटे बच्चों सहित भक्तगण मन्नत माँगते हुए ज़मीन पर लेट-लेट कर प्रणाम करते हुए नदी तक जाते हैं। संतान प्राप्ति की मन्नत पूरी होने पर मिट्टी के हाथी को भेंट चढ़ाने की परम्परा है, यह गहरी व्यक्तिगत आस्था को दर्शाते हैं।

छठ पूजा का उत्सव अपने पारम्परिक भूगोल से आगे निकल गया है। प्रवासी भारतीयों के प्रवास के साथ, इस त्योहार को दुनिया भर में नए घर मिल गए हैं। विदेशी धरती पर, सामुदायिक संगठन झीलों, नदियों और सार्वजनिक तालाबों के किनारे घाटों का सावधानीपूर्वक पुनर्निर्माण करते हैं। यह वैश्विक उत्सव एक महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक आधार के रूप में कार्य करता है, जो आने वाली पीढ़ियों को अपनी विरासत से जुड़ने, विदेशों में सामुदायिक भावना को बढ़ावा देने और इस प्राचीन परम्परा को वैश्विक दर्शकों से परिचित कराने का अवसर प्रदान करता है।

संक्षेप में, छठ पूजा एक धार्मिक त्योहार से कहीं बढ़कर है। यह एक समग्र उत्सव है जो अटूट भक्ति, परिवार के प्रति अगाध स्नेह, प्रकृति के प्रति श्रद्धा और सामाजिक समरसता की अद्भुत भावना को एक सूत्र में पिरोता है। भारत के हृदयस्थलों से लेकर वैश्विक मंच तक, इसकी यात्रा इसके स्थायी आकर्षण और एकीकृत शक्ति के रूप में इसकी भूमिका को रेखांकित करती है, जो भारत की सामाजिक एकता और आध्यात्मिक गहराई का एक अनूठा अनुभव प्रदान करती है।

छठ की भावना

छठ पूजा एक अत्यंत पवित्र और प्राचीन हिन्दू पर्व है जो सूर्य देव और उनकी अर्द्धांगिनी छठी मैया (देवी ऊषा या प्रभात की देवी) को समर्पित है। इस पूजा के प्रत्येक अनुष्ठान और उपयोग किए जाने वाले हर तत्त्व का गहरा प्रतीकात्मक महत्त्व है।
यहाँ छठ पूजा में उपयोग किए जाने वाले प्रमुख तत्त्वों की विस्तृत सूची और उनका महत्त्व बताया गया है और साथ में उनका स्रोत भी दिया गया है।

गंगा नदी अथवा स्वच्छ जल का कोई भी स्रोत

नदी, तालाब या किसी स्वच्छ बहते प्राकृतिक स्रोत का जल छठ पूजा का मुख्य तत्त्व है। इसे शुद्धिकरण का माध्यम और ब्रह्मांडीय सौर ऊर्जा का संवाहक माना गया है। यह हमारे जीवन, निरंतरता और सार्वभौमिक चेतना का प्रतीक है।

ठेकुआ

गेहूँ के आटे को गुड़ अथवा चीनी से सान कर बनाई गई एक पारम्परिक तली हुई मिठाई है ठेकुआ। यही इस पूजा का मुख्य प्रसाद होता है। इसकी गोल आकृति सूर्य देव का प्रतीक मानी जाती है। ठेकुआ बनाने में विशुद्ध सामग्री (धरती से उपजा गेहूँ और गन्ने से बना गुड़) इस्तेमाल होती है। ये जीवन के आधार, समृद्धि और मिठास का प्रतीक है।

सूप/डला

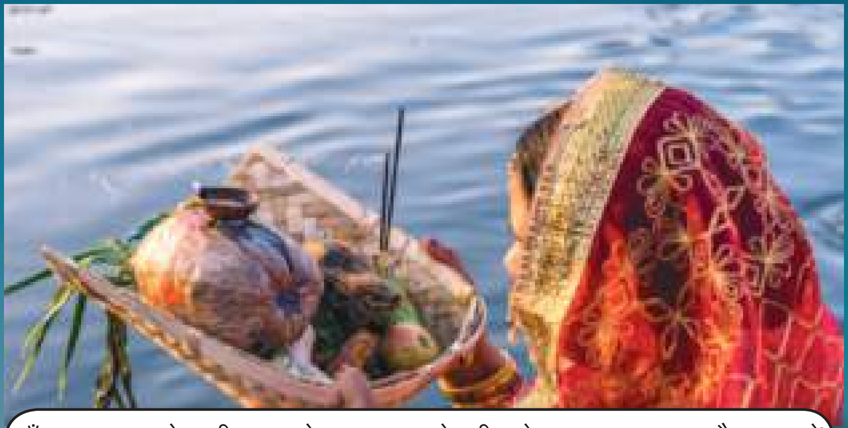

बाँस या धातु से बनी एक गोल, सपाट टोकरी को सूप कहा जाता है। सूप में सारी अर्पण सामग्री रख कर नदी तट तक ले जाई जाती है। इसका गोल आकार जीवनचक्र, समयचक्र और ब्रह्मांड की चक्रीय प्रकृति के साथ-साथ सूर्य के गोले का भी प्रतीक है। यह दिव्य ऊर्जा के संचयन और अपनी पूरी फसल तथा जीवन, देवता को समर्पित करने का भी प्रतीक है।

गन्ना

पूरा गन्ना, गुड़ और शक्कर। गन्ना उर्वरा शक्ति, समृद्धि और धरती की प्रचुरता का प्रतीक है। इसका उपयोग, प्रसाद यानी ठेकुआ बनाने के अलावा पूजा के समय घाट पर देवता स्वरूप खड़ा करने में किया जाता है।

मिट्टी या पीतल के बर्तन (लोटा)

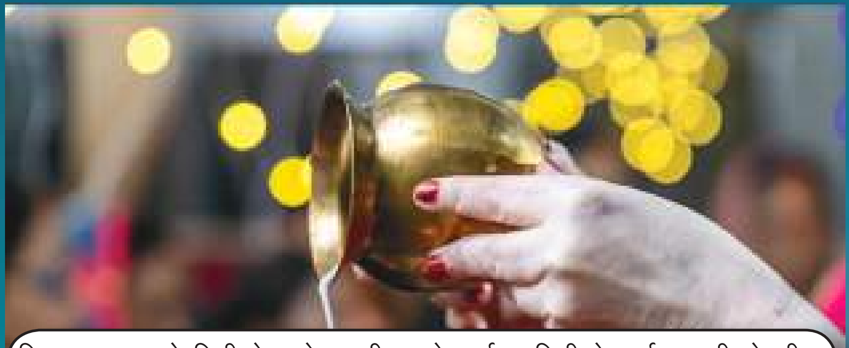

बिना चमक वाले मिट्टी के घड़े या पीतल के बर्तन। मिट्टी के बर्तन पृथ्वी से सीधा संबंध दर्शाते हैं। ये पवित्र, प्राकृतिक और जैविक रूप से नष्ट होते हैं। इन बर्तनों में प्रसाद (जैसे खीर) के लिए दूध उबालना विशेष रूप से शुभ और पवित्र माना जाता है। पीतल को पवित्रता का प्रतीक माना जाता है और इसमें रोग निवारक गुण भी होते हैं।

मौसमी फल

केला, नारियल, सेब, संतरा जैसे मौसमी फल और विशेष रूप से गगरा नींबू और कद्दू (कद्दू भोपला, मखाना) – ये सभी छठ पूजा में उपयोग किए जाते हैं। फल, सूर्य की ऊर्जा के फलदायक परिणामों के प्रतीक हैं जिससे प्रकाश-संश्लेषण और वृद्धि सम्भव होती है। ऋतु के पहले फल देवताओं को अर्पण करना कृतज्ञता और आभार व्यक्त करने का एक पवित्र कर्म माना जाता है।

नारंगी सिन्दूर

छठ पर्व में विवाहित महिलाएँ विशिष्ट अंदाज़ में नारंगी सिन्दूर नाक से पूरी माँग तक लगाती हैं। यह व्रती की एक पवित्र पहचान है जो उनकी पवित्रता और तपस्या को दर्शाता है। चटक नारंगी सिन्दूर सूर्य देव का सम्मान करता उनकी ऊर्जा का प्रतीक है। यह व्रती के पति के दीर्घायु और कल्याण की प्रार्थना करता है।

दीये

मिट्टी के बने दीयों में घी और रूई की बाती। दीये का प्रकाश, अंधकार और अज्ञानता दूर करने का प्रतीक है। शाम के अर्घ्य के समय दीया जलाने का अर्थ सूर्यास्त पर भी सूर्य देव के जीवनदायी प्रकाश के प्रति आभार व्यक्त करना और दिव्य चेतना की शाश्वत उपस्थिति का प्रतीक है।

हम ही परिवर्तन

सक्रिय सामुदायिक भागीदारी

जब लोग एक साझा उद्देश्य हासिल करने को स्वेच्छा से एकजुट होते हैं, तभी परिवर्तन आरम्भ होता है। भारत की, 'विकसित भारत' बनने की यात्रा ने दिखाया है कि राष्ट्रीय अभियानों की ज़िम्मेदारी जब नागरिक ले लेते हैं, तो परिवर्तन अनिवार्य हो जाता है। सफ़ाई से स्वास्थ्य तक, पर्यावरण संरक्षण से कल्याण तक– हर पहल जिसमें लोगों की भागीदारी रहती है वो वास्तव में उत्साहपूर्ण जन–भागीदारी, एक जन–आंदोलन बन जाती है। 'हम ही परिवर्तन' की भावना वाले इन आंदोलनों में हर व्यक्ति का राष्ट्र विकास में योगदान होता है।

स्वच्छ भारत मिशन

2 अक्तूबर, 2014 से शुरू हुए **स्वच्छ भारत मिशन** ने, नागरिक गौरव की भावना जगाई और लाखों लोगों को अपने आस–पास की ज़िम्मेदारी लेने को प्रेरित किया। गाँवों, क़स्बों और शहरों में नागरिकों ने झाड़ू पकड़ी, कचरे के ढेर हटाए और अपना क्षेत्र स्वच्छ रखने का संकल्प लिया। यह आंदोलन सामाजिक विभाजन को पाटते हुए हर वर्ग के लोगों को एक साथ लाया; अधिकारियों और छात्रों से लेकर जानी–मानी हस्तियों, रक्षाकर्मियों और आध्यात्मिक नेता तक, सभी एक साझा उद्देश्य से जुड़े।

कभी उपेक्षित रहे सार्वजनिक स्थान लोगों की देखभाल की वजह से ही गौरव का स्थान बन सके। स्थानीय समूहों ने स्वच्छता और कचरे के उचित प्रबंधन को बढ़ावा देने के लिए स्वच्छता अभियान, जागरूकता संबंधी जनसभाएँ और सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ आयोजित कीं। यह केवल एक अभियान न रह कर, आदतों और मानसिकता में बदलाव लाने की सामूहिक प्रतिबद्धता बन गया। इस आंदोलन ने स्वच्छता की परिभाषा ही बदल दी जिसे कुछ लोगों की ज़िम्मेदारी ने एक साझा राष्ट्रीय उत्तरदायित्व में परिवर्तित किया। इसकी असली सफलता केवल शौचालयों या कचरे के डिब्बों की संख्या में नहीं है बल्कि नागरिकों में यह विश्वास जगाने में है कि स्वच्छ भारत की शुरुआत हर एक व्यक्ति से होती है।

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस

प्राचीन भारतीय परम्परा योग अब स्वास्थ्य और सौहार्द का वैश्विक उत्सव बन गया है। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस शुरु होने के बाद दुनिया भर के लाखों लोग इसे शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक कल्याण का एक मार्ग मानते हुए अपना रहे हैं। आधिकारिक आयोजन के रूप में शुरु

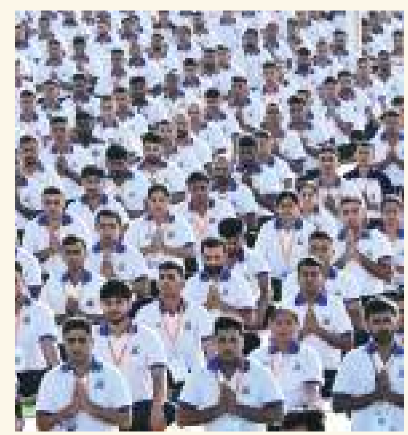

हुआ एक औपचारिक आयोजन, देश-विदेश में अनेक समुदायों के एक साथ अभ्यास शुरू करने से जल्द ही जन-आंदोलन बन गया।

आधुनिक चुनौतियों के प्रति समग्र दृष्टिकोण के कारण योग की लोकप्रियता बढ़ी है। तेज़ रफ्तार जीवनशैली के इस युग में योग, संतुलन और शांति प्रदान करता है। शैक्षणिक संस्थान, स्थानीय क्लब और कार्यस्थलों ने बाक़ायदा योग सत्र शामिल करना शुरू किया है क्योंकि इनका मानना है कि योग में एकाग्रता और सहनशीलता विकसित करने का गुण है। 21 जून को होने वाला वार्षिक उत्सव अब एकता का प्रतीक बन गया है जिसमें एक स्वस्थ विश्व का निर्माण करने के लिए हर उम्र, धर्म और राष्ट्र के लोग एक साथ अभ्यास करते हैं।

एक पेड़ माँ के नाम

पर्यावरणीय जागरूकता को भावनाओं से जोड़ते हुए *एक पेड़ माँ के नाम* अभियान, व्यक्तिगत प्रेम को वैश्विक उत्तरदायित्व से बड़ी ख़ूबसूरती से, जोड़ता है। वर्ष 2024

में विश्व पर्यावरण दिवस पर शुरू हुआ यह अभियान प्रत्येक नागरिक से आग्रह करता है कि वे अपनी माँ के नाम पर एक पेड़ लगाएँ। यह एक ऐसा प्रतीकात्मक कदम है जो मातृत्व और धरती माँ, दोनों का सम्मान करता है। रोपा गया हर पौधा कृतज्ञता, संरक्षण और विरासत की एक कहानी लिए होता है। परिवारों, विद्यालयों और सामुदायिक समूहों द्वारा यह पहल अपनाए जाने से, वृक्षारोपण एक सामाजिक परम्परा बनता जा रहा है। इस अभियान की सादगी ही इसकी सबसे बड़ी शक्ति है जिसमें एक भावात्मक श्रद्धांजलि, पर्यावरण संरक्षण का सार्थक कार्य बन जाती है। यह प्रतीक है कि जैसे माँ जीवन का पोषण करती है, वैसे ही धरती का पोषण करना हमारी ज़िम्मेदारी है ताकि भावी पीढ़ियों के लिए हम स्वस्थ भविष्य तैयार कर सकें।

जन भागीदारी का बल

अभियानों में जब जन-भागीदारी का भाव शामिल हो जाता है तो वे सरकारी कार्यक्रमों की सीमाएँ लाँघ कर लोगों द्वारा, लोगों के लिए और लोगों के साथ चलने वाले जन-आंदोलन बन जाते हैं। *स्वच्छ भारत अभियान, अंतरराष्ट्रीय योग दिवस* और *एक पेड़ माँ के नाम* जैसी पहलों की सफलता बताती है कि राष्ट्र निर्माण में सामूहिक प्रयास और नागरिक सहभागिता कितनी बलशाली होती है। सच्ची प्रगति केवल नीतियों से नहीं बल्कि लोगों के जुनून, ज़िम्मेदारी और एकजुटता से आगे बढ़ती है। एक स्वच्छ, स्वस्थ और हरित भारत के निर्माण में हम ही परिवर्तन हैं जिनकी सामूहिक सक्रियता, राष्ट्रीय परिवर्तन की मजबूत नींव बनाती है।

अर्जुनभाई मोढवाडिया
वन एवं पर्यावरण, जलवायु परिवर्तन और विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री
गुजरात

मैंग्रोव प्रभाव

गुजरात, 2340.62 किलोमीटर लम्बाई के साथ, देश की सबसे लम्बी तटरेखा वाला राज्य है। सौराष्ट्र प्रायद्वीप का भाल क्षेत्र खम्भात की खाड़ी के पश्चिमी तट पर स्थित है। यही वह क्षेत्र है जहाँ धोलेरा स्थित है। गुजरात वन विभाग धोलेरा के दलदली क्षेत्रों में मैंग्रोव का निरंतर रोपण कर रहा है, जिससे एक प्रभावी 'हरित कवच' का निर्माण हो रहा है। इससे हितधारकों को अनेक पारिस्थितिक और आर्थिक लाभ मिल रहे हैं।

धोलेरा और उसके आसपास के स्थानीय सामुदायिक हितधारकों के लिए मैंग्रोव पुनर्स्थापन परियोजना के लाभ

धोलेरा क्षेत्र में मैंग्रोव रोपण अभियान से मछुआरा समुदाय के लिए मछलियों, केकड़ों और अन्य वाणिज्यिक समुद्री उत्पादों को पकड़ने में वृद्धि हुई है। इसके अलावा, समुद्र तट पर एक हरित दीवार का काम करने वाली मैंग्रोव की सुरक्षात्मक प्रकृति के कारण, समुदाय के हितधारकों को भी चरम मौसम की घटनाओं के प्रति बेहतर लचीलापन मिलता है।

धोलेरा में रोपण के पैमाने (3,500 हेक्टेयर से अधिक) के परिणामस्वरूप आसपास के खेतों में लवणता के प्रवेश में भी बदलाव आ रहा है।

पडाला द्वीप, कोरी क्रीक कच्छ में मैंग्रोव लर्निंग सेंटर

गुजरात का कच्छ कुल मैंग्रोव क्षेत्र का 71 प्रतिशत हिस्सा है। कच्छ पश्चिम वन प्रभाग, तटीय आवासों और मूर्त आय के लिए मैंग्रोव पहल (MISHTI) योजना के तहत, कोरी क्रीक क्षेत्र में मैंग्रोव रोपण और अन्य गतिविधियाँ कर रहा है। हर साल 1.5 लाख से अधिक पर्यटक नारायण सरोवर - कोटेश्वर क्षेत्र का दौरा करते हैं, जो सीमा पर्यटन सर्किट का एक हिस्सा है। कोरी क्रीक क्षेत्र में जागरूकता बढ़ाने और पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए एक मैंग्रोव लर्निंग सेंटर बनाया गया है।

इस केंद्र द्वारा पर्यटकों को मैंग्रोव पारिस्थितिकी तंत्र और जलवायु परिवर्तन एवं स्थानीय समुदायों में इसके लाभों/योगदान के बारे में जागरूक किया जाता है। पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए मैंग्रोव लर्निंग सेंटर में विभिन्न संरचनाएँ जैसे व्याख्या केंद्र, गजेबो, वॉच टावर, पाथवे, ऑडिटोरियम हॉल का निर्माण किया गया है।

धोलेरा में मैंग्रोव संरक्षण और पर्यावरणीय स्थिरता एवं तटीय संरक्षण

पारिस्थितिकी तंत्र बहाली पर चल रहे संयुक्त राष्ट्र (UN) दशक और IUCN (अंतरराष्ट्रीय प्रकृति संरक्षण संघ)–बॉन चैलेंज के अनुरूप, भारत ने मैंग्रोव रिक्त स्थानों और क्षीण मैंग्रोव क्षेत्रों सहित क्षीण पारिस्थितिकी तंत्रों की बहाली के लिए प्रतिबद्धता जताई है। 2023 में शुरू किया गया भारत सरकार का कार्यक्रम, तटीय आवासों और मूर्त आय के लिए मैंग्रोव पहल (MISHTI) मैंग्रोव वृक्षारोपण के लिए एक व्यापक योजना है जिसका उद्देश्य धोलेरा तट के साथ विश्वसनीय 'हरित दीवार' बनाना है, जो तटरेखा को मौसम के प्रभावों से बचाती है।

गुजरात वन विभाग द्वारा अपनाई गई रणनीतियाँ और विधियाँ

GEER फाउंडेशन और GEC (गुजरात पारिस्थितिकी आयोग, अब इसका GEER फाउंडेशन में विलय हो गया है) द्वारा किए गए सर्वेक्षणों से प्राप्त

मैंग्रोव एटलस के आधार पर, साथ ही गूगल अर्थ इमेजरी और अनिवार्य ग्राउंड ट्रुथिंग का उपयोग करके, मैंग्रोव रोपण के लिए सम्भावित क्षेत्रों की पहचान की जाती है। राज्य योजनाओं और CSS (केंद्र प्रायोजित योजना) योजनाओं के तहत आवंटित लक्ष्यों के आधार पर, जिन भू-टैग किए गए बहुभुजों पर रोपण किया जाना है, उन्हें तैयार किया जाता है। इसके बाद एक 'उपचार मानचित्र' दस्तावेज़ तैयार किया जाता है, जिसमें रोपण मॉडल के प्रावधानों के अनुसार सभी तकनीकी विवरण शामिल होते हैं, जिसके आधार पर मैंग्रोव रोपण किया जाता है।

तटीय पारिस्थितिकी तंत्र, जैव विविधता और समुद्री जीवन को बेहतर बनाने में मैंग्रोव का योगदान

समुद्री जीवन : मैंग्रोव की जड़ें कई मछलियों, क्रस्टेशियंस, केकड़ों और अन्य समुद्री जीवों के लिए अंडे देने की प्राकृतिक सतह का काम करती हैं, जिसके परिणामस्वरूप अंडे से निकले बच्चे सुरक्षित रूप से आश्रय वाले क्षेत्र में पर्याप्त मात्रा में भोजन की उपलब्धता के साथ विकसित होते हैं।

पक्षियों और अन्य वन्यजीवों के लिए आवास : मैंग्रोव स्थानीय और प्रवासी पक्षियों, सरीसृपों और छोटे स्तनधारियों के लिए घोंसले बनाने,

बसेरा बनाने और भोजन करने के स्थान प्रदान करते हैं। निम्न वर्ग के जानवरों की समृद्ध विविधता के कारण भेड़ियों, सियारों और लोमड़ियों जैसे शिकारियों की संख्या में भी वृद्धि हुई है। मैंग्रोव के फूल शहद के अच्छे स्रोत हैं और मधुमक्खियों तथा अन्य परागणकों की अच्छी आबादी का पोषण करते हैं।

तटीय पारिस्थितिकी तंत्र में सुधार

मैंग्रोव की जड़ें तलछट, प्रदूषकों और अतिरिक्त पोषक तत्वों को रोकती हैं, तथा मैलापन कम करती हैं और हानिकारक शैवाल प्रस्फुटन को रोकती हैं, जिससे तटीय पारिस्थितिकी तंत्र के समग्र स्वास्थ्य में सुधार होता है।

चुनौतियाँ और सम्भावित समाधान

- मैंग्रोव रोपण के लिए उपयुक्त अधिकांश मडफ्लैट राजस्व क्षेत्र हैं, समुद्र-भूमि इंटरफेस की गतिशील प्रकृति के कारण उनमें से कुछ का सर्वेक्षण नहीं हो सकता है। यद्यपि मैंग्रोव CRZ (तटीय नियामक क्षेत्र) जोन 1A के अंतर्गत आते हैं, यह आवश्यक है कि 'हरित दीवार' प्रयासों की दीर्घकालिक अखंडता के लिए क्रमिक रूप से रणनीतिक मैंग्रोव क्षेत्रों को या तो 'संरक्षित वन' या 'आरक्षित वन' घोषित किया जाए।
- धोलेरा तट पर मैंग्रोव रोपण का समय नवम्बर से जनवरी तक हुआ करता था। लेकिन सामुदायिक संवाद द्वारा रोपण समय को जुलाई से अक्तूबर के बीच स्थानांतरित करने का प्रयास किया गया। 2025 के मौसम में शीघ्र रोपण का प्रयोग किया गया और इसके परिणाम बहुत उत्साहजनक पाए गए। इस प्रकार, सर्दियों के दौरान रोपण की सीमित अवधि की चुनौती दूर हो गई है, परिणामस्वरूप रोपण का मौसम लम्बा हो गया है, जिससे भविष्य में बेहतर मैंग्रोव आवरण होने की उम्मीद है।

निष्कर्ष

यह बहुत महत्त्वपूर्ण है कि सेमीकंडक्टर निर्माण, स्मार्ट सिटी के विकास और संबंधित मल्टीमॉडल बुनियादी ढांचे जैसे महत्त्वपूर्ण प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में सरकार के बड़ी पूंजी के निवेश में जलवायु परिवर्तन के प्रतिकूल प्रभावों के खिलाफ एक अच्छा बैकअप होना चाहिए। इस संदर्भ में, गुजरात वन विभाग द्वारा मैंग्रोव वृक्षारोपण, समुद्र तट की स्थिरता के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण है, जो समुद्री जीवन के साथ-साथ स्थानीय और प्रवासी पक्षियों के लिए उत्कृष्ट आवास प्रदान करता है। स्थानीय मछुआरा समुदाय को भी अधिक मछली पकड़ने से बहुत लाभ हुआ है।

जन अभियान

परिवर्तन के वाहक बने नागरिक

कचरा प्रबंधन से लेकर जल संरक्षण तक देशभर के नागरिक, सामूहिक प्रयासों और अपनी प्रतिबद्धता से परिवर्तन के वाहक बन रहे हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने जनभागीदारी की शक्ति प्रदर्शित करने वाले ऐसे प्रेरक उदाहरणों को रेखांकित किया है। छत्तीसगढ़ के अम्बिकापुर में 2019 में शुरू हुई एक अनोखी पहल

'गार्बेज कैफ़े'

ने कचरा प्रबंधन को एक सामाजिक आंदोलन का रूप दिया है। अम्बिकापुर नगर निगम का यह कैफ़े प्लास्टिक के कचरे के बदले भोजन देता है। यह एक ऐसी सोच है जो इंसान और प्रकृति दोनों का पोषण करती है।

यह कैसे काम करता है

- 1 किग्रा प्लास्टिक का कचरा लाएँ – एक समय का भोजन पाएँ
- ½ किग्रा प्लास्टिक का कचरा लाएँ – नाश्ता पाएँ

"इस योजना का सीधा लाभ यह है कि हमें शुद्ध और अलग किया हुआ प्लास्टिक मिलता है जो हमारे ठोस एवं तरल संसाधन प्रबंधन (SLRM) केंद्रों तक पहुँच रहा है। मौजूदा स्थिति देखें तो प्रतिदिन 8 से 10 लोग यहाँ आते हैं। अब तक 22,000 से अधिक लोग इस योजना का लाभ ले चुके हैं। उनके माध्यम से हमें लगभग 19,000 किलोग्राम प्लास्टिक मिल चुका है जिसे हमने रिसाइकिल के लिए दानों में बदल दिया।"

–ऋतेश सैनी, नोडल अधिकारी, स्वच्छ भारत मिशन (शहरी), नगर निगम अम्बिकापुर, सरगुजा, छत्तीसगढ़

'से-ट्रीज़'

बेंगलुरु में इंजीनियर कपिल शर्मा अपनी संस्था 'से-ट्रीज़' के माध्यम से शहर के जलाशयों को पुनर्जीवित कर रहे हैं। वे अब तक देश के विभिन्न राज्यों की 50 झीलों का पुनरुद्धार कर चुके हैं।

2030 का उनका मिशन

- 500 झीलों का पुनरुद्धार
- 1 लाख किसानों के साथ फलदार पेड़ लगाना

"एक दिन झील के पास पौधारोपण करते हुए मुझे एक बात स्पष्ट महसूस हुई कि अगर पेड़ों से ज़मीन को जीवन मिलता है तो झीलें लोगों को जीवन देती हैं। इसलिए 2017 में मैंने पहली बार झील पुनरुद्धार की अपनी योजना शुरू की। यह चुनौतीपूर्ण, अनिश्चित और मेरी कल्पना से कहीं अधिक जटिल कार्य निकला। लेकिन जब एक-एक बूँद पानी लौटने लगा, हर पंछी वापस आने लगा और आसपास के समुदायों के चेहरे पर मुस्कान लौटने लगी तो मुझे यक़ीन हो गया कि मेरा यह प्रयास सार्थक है। उस एक झील से यह आंदोलन आगे बढ़ा। यह सब सम्भव नहीं होता यदि सरकारी अधिकारियों का सहयोग और उससे भी बढ़कर उन स्थानीय समुदायों का साथ हमें न मिला होता जिन्होंने इन झीलों को फिर से अपना बना लिया।"

–कपिल शर्मा, संस्थापक और ट्रस्टी, से-ट्रीज़ एन्वायरमैंटल ट्रस्ट

अम्बिकापुर के कचरा योद्धाओं से लेकर बेंगलुरु के जल रक्षकों तक की ये पहलें जनभागीदारी की सच्ची भावना दर्शाती हैं कि नागरिक अब समुदायों, कॉर्पोरेट्स और स्थानीय अधिकारियों के साथ मिलकर काम कर रहे हैं।

डॉ. शमशेर सिंह
भारतीय पुलिस सेवा
अपर महानिदेशक
बीएसएफ़ अकादमी, ग्वालियर

भारतीय नस्लें, अविश्वसनीय कारनामे :

भारत में स्वदेशी K9 क्रांति में अग्रणी सीमा सुरक्षा बल

प्राचीन काल से ही भारत के इतिहास, संस्कृति और मिथकों में श्वान अर्थात कुत्तों को सम्मानजनक स्थान मिला है। देशी भारतीय नस्लों के साहस, निष्ठा और दमखम की लम्बे समय से प्रशंसा होती रही है। ग्रामीणों और उनके आस-पास के कुत्तों के बीच सामाजिक संबंध के अलावा शाही दरबारों और युद्धक्षेत्रों में उनकी उपस्थिति, मानव और कुत्तों के बीच गहरा संबंध दर्शाती है जिसे भारत की सैनिक और सांस्कृतिक विरासत में देखा जा सकता है।

इस गौरवशाली विरासत का एक नया अध्याय अगस्त 2020 में शुरू हुआ, जब हमारे माननीय प्रधानमंत्री ने अपने 'मन की बात' कार्यक्रम में, सुरक्षा बलों सहित देश भर के लोगों से अपील की कि वे श्वान की भारतीय नस्लें अपनाएँ और उन्हें बढ़ावा दें। उनकी यह अपील *आत्मनिर्भर भारत* और *वोकल फ़ॉर लोकल* की भावना के अनुरूप थी। इस आह्वान ने आत्मनिर्भरता, राष्ट्रीय गर्व और देशी पुनरुत्थान की नींव पर आधारित एक राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित किया।

इस राष्ट्रीय उद्देश्य के मद्देनजर सीमा सुरक्षा बल अकादमी, ग्वालियर के राष्ट्रीय श्वान प्रशिक्षण केन्द्र (नेशनल ट्रेनिंग सेंटर फॉर डॉग्स) ने भारतीय K9 नस्ल के कुत्तों को ऑपरेशनल उपयोग में लाने का प्रशिक्षण देना शुरू किया। इस नस्ल की अब तक अनदेखी होती रही थी।

यह यात्रा, उपयुक्त भारतीय नस्ल चुनने के शोध से आरम्भ हुई हालाँकि अनेक स्वदेशी नस्लों का सैन्य अभियानों से ऐतिहासिक संबंध रहा है, पर सीमा सुरक्षा बल ने दो नस्लों – रामपुर हाउंड और मुढोल हाउंड को चुना। इनमें एक उत्तरी मैदानी इलाक़ों की नस्ल है, जो पश्चिमी और पूर्वी सीमाओं की परिस्थितियों के लिए अनुकूल है, जबकि दूसरी दक्षिण के पठार की नस्ल है, जो अधिक तगड़ी और दमदार मानी जाती है।

दोनों ही नस्लों ने, देश की जलवायु संबंधी परिस्थितियों और क्षेत्रीय भौगोलिक विविधता को देखते हुए बेहतरीन अनुकूलन क्षमता प्रदर्शित की है। यही नहीं, लम्बी अवधि के अभियानों में उनके दमखम और धैर्य ने उन्हें सीमावर्ती और मैदानी कार्यों के उपयुक्त सिद्ध किया है। इन नस्लों को गति, साहस, फुर्ती, सतर्कता, निष्ठा और तीव्र मौलिक प्रवृत्तियों के लिए जाना जाता है- ये सभी गुण उन्हें ऑपरेशन के दौरान अत्यंत प्रभावी बनाते हैं।

इन देसी नस्लों को एकदम से प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल नहीं किया गया, बल्कि उनके मूल स्वभाव, आवश्यकताओं और व्यावहारिक विशेषताओं को समझने के लिए कड़ी निगरानी में रखा गया। पहली पीढ़ी के इन कुत्तों को केवल खेलने और इंसानों के बीच घुलने-मिलने दिया गया।

इसके बाद वैज्ञानिक प्रजनन की योजना बनी और दूसरी पीढ़ी के कुत्तों को अत्यंत सावधानी से पाला-पोसा गया। उन्हें मूलभूत तथा संज्ञानात्मक समृद्धि प्रोटोकॉल (कॉग्निटिव ऐनरिचमेंट प्रोटोकॉल) से सँवारते हुए मानव-श्वान संबंध को और अधिक मजबूत किया गया।

इसके बाद जो तीसरी पीढ़ी के कुत्ते मिले, उन पर प्रशिक्षण का नया प्रोटोकॉल लागू किया जो इन नस्लों की कुदरती प्रवृत्तियों के अनुरूप वैज्ञानिक रूप से तैयार किया गया था।

प्रशिक्षण में प्रौद्योगिकी और नवाचार

1. प्रजनन के प्रयासों में कोशिका-विज्ञान (साइटोलॉजिकल) विश्लेषण, मोबाइल ऐप से अंडोत्सर्ग (हीट) का पूर्वानुमान और खान-पान में पोषण को सावधानीपूर्वक शामिल करना है।
2. NTCD टेकनापुर ने स्वदेशी नस्लों का प्रदर्शन बेहतर करने के लिए आधुनिक प्रशिक्षण और तकनीकी साधन अपनाए। इनमें ध्वनि और गंध आधारित कंडीशनिंग, सेंट-किट, नवीनतम प्रशिक्षण उपकरण, कुदरती बाधाएँ और रामपुर तथा मुढोल हाउंड की शारीरिक संरचना एवं स्वभाव के अनुसार तैयार किया गया बाधा कोर्स

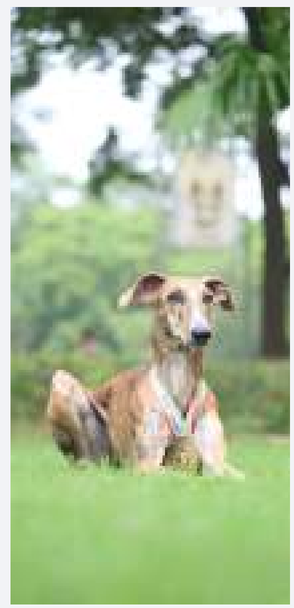

शामिल है। सिंथेटिक गंध किट और स्यूडो-सेंट सिस्टम के उपयोग से तेज़ी से सीखने, गंध की पहचान बेहतर करने और हैंडलर व कुत्ते के बीच सही एवं मज़बूत तालमेल सुनिश्चित हुआ है।

3. कुत्ते के बुनियादी उपकरण जैसे हल्की लीश और कॉलर, विशेष रूप से डिज़ाइन किए गए हार्नेस, खाने की गहरी प्लेटें, नर्म ग्रूमिंग ब्रश जैसे नवाचार ने इन कुत्तों की बेहतर देखभाल में योगदान दिया।

प्रशिक्षण का नया दर्शन शास्त्र

भारतीय कुत्तों के लिए नस्ल विशेष मॉड्यूल शामिल करने के उद्देश्य से प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में संशोधन करके इसे फिर से तैयार किया गया। इन मैनुअल में गतिशीलता, दैनिक अभ्यास में लचीलापन, सकारात्मक प्रोत्साहन और धीरे-धीरे मेलजोल बढ़ाने पर बल दिया गया है। इस बात पर ध्यान दिया गया कि यह प्रशिक्षण कुत्तों की कुदरती प्रवृत्तियों के अनुरूप हो। श्वान-प्रशिक्षकों को विदेशी नस्लों का प्रशिक्षण प्रोटोकॉल भुलाकर, प्रशिक्षण के नए तौर-तरीक़े सीखने को प्रोत्साहित किया गया जिससे उन्हें स्वदेशी नस्लों को समझने और सिखाने में आसानी हुई।

सीमा सुरक्षा बल का गौरव - *रिया*

2024 में लखनऊ में आयोजित ऑल इंडिया पुलिस ड्यूटी मीट में रिया ने 'बेस्ट इन ट्रैकर ट्रेड' और 'बेस्ट डॉग ऑफ द मीट' दोनों ख़िताब जीतकर इतिहास रचा और एक सौ से अधिक विदेशी नस्ल के प्रतियोगी कुत्तों को पछाड़ कर राष्ट्रीय चैम्पियन बनी। गंध पहचानने में उसकी उत्कृष्ट योग्यता, फुर्ती और अनुशासन ने उसे देशव्यापी सम्मान दिलाया और भारतीय नस्लों की क्षमता सिद्ध कर दी।

माननीय प्रधानमंत्री ने 26 अक्तूबर, 2025 को अपने 'मन की बात' कार्यक्रम में रिया की उपलब्धि का विशेष उल्लेख करते हुए, स्वदेशी नस्लों को प्रशिक्षित और तैनात करने के लिए सीमा सुरक्षा बल की सराहना की। उन्होंने इसे सुरक्षा बलों में भारत की आत्मनिर्भरता का जगमगाता उदाहरण बताया और इस दिशा में अग्रणी प्रयासों के

लिए सीमा सुरक्षा बल को बधाई दी।

भारतीय नाम, भारतीय पहचान

आत्मनिर्भर भारत के प्रतीक के रूप में, सीमा सुरक्षा बल ने अपने कुत्तों को सम्राट, मोगली, लिली, सांता और रिया जैसे भारतीय नाम दिए हैं। भारतीय नाम रखने का मुख्य उद्देश्य अपनी सांस्कृतिक विरासत उजागर करना और कुत्तों तथा प्रशिक्षकों के बीच भावात्मक संबंध को मानसिक रूप से मज़बूत करना है।

भविष्य की रूपरेखा

- सीमा सुरक्षा बल अपने क्षेत्रीय गठन में स्वदेशी नस्लों के प्रजनन, प्रशिक्षण और तैनाती कार्यक्रमों का विस्तार कर रहा है।
- आनुवांशिक सुधार और प्रदर्शन में निरंतर बेहतरी लाने के लिए, प्रजनन और प्रदर्शन का मूल्यांकन करने का एक कार्यक्रम विकसित किया जा रहा है।
- स्वदेशी K9 नस्लों का सतत विकास सुनिश्चित करने के लिए इनके पोषण, स्वास्थ्य और रोग प्रतिरोधक क्षमता के बारे में पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थानों के साथ मिलकर काम किया जाता है।
- स्वदेशी नस्लों का प्रजनन उत्पादन बढ़ाकर अन्य सुरक्षा बलों तथा आम नागरिकों को बढ़िया गुणों वाले शावकों की आपूर्ति पर भी विचार किया जा रहा है।
- कन्नी, चिप्पिपरई, कोम्बाई, हिमालयन शीपडॉग, बखरवाल जैसी अन्य स्वदेशी नस्लों के बारे में जानकारी एकत्र करना भी विचाराधीन है।
- भविष्य में इंडी-K9 को निर्यात करने की सम्भावनाओं पर भी विचार किया जा सकता है।

राष्ट्रीय गर्व का एक अहम पल गुजरात के एकता नगर में आयोजित एकता दिवस परेड के दौरान देखने को मिला, जहाँ सीमा सुरक्षा बल की केवल भारतीय नस्ल के कुत्तों से बनी मार्चिंग टुकड़ी ने हिस्सा लिया। इस टुकड़ी ने ऐसी उत्कृष्ट संचालन क्षमता और अनुशासन दिखाया जिसे देश की आत्मनिर्भर K9 शक्ति का जीता-जागता प्रतीक कह सकते हैं।

माननीय प्रधानमंत्री की दृष्टि के अनुरूप- देशी नस्लें, अविश्वसनीय कारनामे करती हुईं अपनी अतुलनीय निष्ठा और गर्व के साथ राष्ट्र की सेवा में समर्पित हैं।

सरदार वल्लभभाई पटेल

दृढ़ इच्छाशक्ति के प्रतीक

"एकता के बिना जनशक्ति ताकत नहीं है, इसलिए उसे उचित रूप से समन्वित तथा एकजुट किया जाना आवश्यक है, और ऐसा करने पर वह आध्यात्मिक शक्ति बन जाती है।"

-सरदार वल्लभभाई पटेल

इस वर्ष का राष्ट्रीय एकता दिवस (31 अक्तूबर) भारत के प्रथम उप-प्रधानमंत्री और गृहमंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती का प्रतीक है। राष्ट्र एक ऐसे नेता को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है जिनका जीवन एकता के विचार को साकार करता था। 'भारत के लौह पुरुष' के रूप में विख्यात, सरदार पटेल ने सामूहिक इच्छाशक्ति को सामूहिक ताकत में परिवर्तित किया और लाखों लोगों की आकांक्षाओं को एक एकीकृत राष्ट्रीय पहचान में बदल दिया।

31 अक्तूबर, 1875 को गुजरात के खेड़ा ज़िले के नाडियाड में एक देशभक्त किसान पिता- झावेरभाई और धार्मिक एवं मेहनती माता लाडबा के घर जन्मे वल्लभभाई पटेल

एक साधारण परिवार से उठकर भारत के सबसे सम्मानित व्यक्तियों में से एक बने। नाडियाड हाई स्कूल का मेधावी छात्र होने के नाते, शुरू से ही वे कानून की पढ़ाई करने के लिए दृढ़ संकल्पित थे। 1912 में, उन्होंने इंग्लैंड के मिडिल टेम्पल से रोमन लॉ में डिस्टिंक्शन के साथ स्नातक की उपाधि प्राप्त की। उन्होंने 1913 में भारत लौटने के बाद अहमदाबाद में अपनी वकालत की प्रैक्टिस में प्रतिष्ठा प्राप्त की। 1915 में वे गुजरात सभा के सदस्य बने और 1924 में अहमदाबाद नगर बोर्ड के अध्यक्ष चुने जाने पर वे ईमानदार और कुशल प्रशासन के आदर्श बन गए। उन्होंने स्वच्छता, सफाई और पारदर्शी प्रशासन पर ध्यान केंद्रित किया। उन्होंने स्वयं जल निकासी लाइनों का निरीक्षण किया, कचरा सफाई अभियानों का पर्यवेक्षण किया, स्वच्छ जल आपूर्ति सुनिश्चित की और नागरिक सेवकों को सम्मानित महसूस कराया। कई बार वे स्वयं सफाई के लिए झाड़ू और कचरा गाड़ी ले जाते थे।

उनकी राजनीतिक यात्रा तब शुरू हुई जब महात्मा गाँधी ने 1918 में खेड़ा सत्याग्रह में उन्हें अपना डिप्टी चुना। यह सरदार पटेल के शुरुआती और सबसे

प्रभावशाली आंदोलनों में से एक था। एक दशक बाद 1928 के बारडोली सत्याग्रह ने सरदार पटेल को एक जननेता के रूप में स्थापित किया। जब अंग्रेज़ों ने गम्भीर कृषि संकट के बावजूद भू-राजस्व में 22 प्रतिशत की अन्यायपूर्ण वृद्धि लागू की तो बारडोली के किसानों ने नेतृत्व के लिए वल्लभभाई पटेल की ओर रुख़ किया। उन्होंने उल्लेखनीय अनुशासन तथा स्पष्टता के साथ आंदोलन का आयोजन

करते हुए, ग्रामीणों को एकजुट करके और उन्हें शांत लेकिन दृढ़ संकल्पित रहने के लिए, मार्गदर्शन देकर इसका जवाब दिया। उनके अटूट नैतिक साहस, प्रेरक वार्ता और रणनीतिक नियोजन, जिसमें बारडोली सत्याग्रह पत्रिका की 9000-12000 प्रतियों का दैनिक वितरण भी शामिल था, ने अंग्रेज़ों को कर वृद्धि वापस लेने के लिए मजबूर कर दिया। उनके दृढ़ समर्थन और पितातुल्य नेतृत्व से प्रभावित होकर, बारडोली के लोगों ने उन्हें 'सरदार' की उपाधि से सम्मानित किया। यह एक ऐसा नाम है जो तब से उनकी पहचान बन गया है।

सम्पूर्ण स्वतंत्रता संग्राम के दौरान वे आंदोलन के एक अडिग स्तम्भ बने रहे। उन्होंने असहयोग आंदोलन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई, दमनकारी ब्रिटिश नीतियों का विरोध किया और 1942 के 'भारत छोड़ो आंदोलन' सहित कई बार जेल

गए। महात्मा गाँधी के निकट सहयोगी के रूप में, उन्होंने 1931 में कांग्रेस के कराची अधिवेशन की अध्यक्षता की और मौलिक अधिकारों तथा आर्थिक नीति पर प्रमुख प्रस्तावों को आकार देने में मदद की। हालाँकि सरदार पटेल का सबसे स्थायी योगदान स्वतंत्रता के बाद आया। भारत के प्रथम उप-प्रधानमंत्री और गृह मंत्री के रूप में उन्होंने 565 स्वशासित रियासतों को भारत संघ में एकीकृत करने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया। कूटनीति, बातचीत और दृढ़ संकल्प के उत्कृष्ट संयोजन के माध्यम से उन्होंने एक विखंडित देश का शांतिपूर्ण एकीकरण सुनिश्चित किया। ऐसा करके उन्होंने एक स्थायी, लोकतांत्रिक और एकजुट राष्ट्र की नींव रखी। सिविल सेवाओं को आकार देने और संविधान निर्माण में उनके योगदान ने भारत के प्रशासनिक तथा संस्थागत ढाँचे को और मजबूत किया। उन्हें 'अखिल भारतीय सेवाओं' का निर्माता माना जाता है, जिन्होंने सिविल सेवकों को 'भारत का स्टील फ्रेम' कहा था।

15 दिसम्बर, 1950 को सरदार पटेल ने अंतिम सांस ली। गुजरात के केवड़िया में नर्मदा नदी के तट पर स्थित 'स्टैच्यू ऑफ यूनिटी' भारत के एकीकरण में सरदार वल्लभभाई पटेल की महत्त्वपूर्ण भूमिका के लिए भव्य श्रद्धांजलि है। 182 मीटर ऊँची यह दुनिया की सबसे ऊँची प्रतिमा है जो उनकी दूरदर्शिता और उनके संकल्प की शक्ति का प्रतीक है।

31 अक्तूबर, 2018 को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा लोकार्पित की गई यह प्रतिमा न केवल एक वास्तुशिल्प चमत्कार है बल्कि एक राष्ट्रीय तीर्थस्थल भी है। यहाँ लाखों लोग भारत के लौह पुरुष का सम्मान करने और उनके द्वारा समर्थित एकता, अखंडता और राष्ट्र निर्माण के मूल्यों पर चिंतन करने आते हैं।

खेड़ा सत्याग्रह और बोरसद सत्याग्रह

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में अनेक आंदोलन हुए। इनमें से कुछ आंदोलनों ने जनता के दिलों में जोश और विश्वास भरने का काम किया। खेड़ा सत्याग्रह और बोरसद सत्याग्रह ऐसे ही दो आंदोलनों के नाम हैं। इनमें सरदार वल्लभभाई पटेल ने ऐसे नेतृत्व का परिचय दिया जिसने अंग्रेज़ सरकार की नींव हिला दी और सत्य, एकता और अहिंसा की ताक़त से जनता ने अपने अधिकार हासिल कर लिए।

खेड़ा सत्याग्रह (1918) – किसानों के हक़ की लड़ाई

- **पृष्ठभूमि :** साल 1918 में गुजरात के खेड़ा ज़िले में किसानों की हालत बहुत ख़राब थी। बारिश कम हुई थी और फ़सलें लगभग बर्बाद हो गई थीं। ऐसे में भी अंग्रेज़ सरकार किसानों से लगान वसूलने का निर्णय वापस लेने के लिए तैयार नहीं हुई।
- **सरदार पटेल का नेतृत्व :** इस अन्याय के ख़िलाफ़ सरदार वल्लभभाई पटेल आगे आए। उन्होंने किसानों को संगठित किया और गाँधी जी के मार्गदर्शन में सत्याग्रह की राह अपनाई।
- **रणनीति :** सरदार पटेल ने किसानों से कहा कि वे एकजुट होकर टैक्स न दें। उन्होंने हिंसा से दूर रहकर शांति और धैर्य से अपनी बात रखने पर ज़ोर दिया।
- **जनशक्ति की जीत :** लगभग ढाई महीने तक चले इस शांतिपूर्ण आंदोलन ने अंग्रेज़ों को झुकने पर मजबूर कर दिया। आख़िरकार सरकार को टैक्स में राहत देनी पड़ी। यह किसानों की बड़ी जीत थी।
- **महत्त्व :** 'खेड़ा सत्याग्रह' ने दिखाया कि अहिंसा और एकता के बल पर बड़ी से बड़ी ताक़त को चुनौती दी जा सकती है। यह आंदोलन स्वतंत्रता संग्राम में जन-आंदोलन का प्रतीक बन गया।

बोरसद सत्याग्रह (1923) – अन्याय के ख़िलाफ़ आवाज़

- **शुरुआत :** 1923 में गुजरात के बोरसद तहसील में अंग्रेज़ सरकार ने 'सुरक्षा टैक्स' लगाया। यह टैक्स अपराध रोकने के बहाने से लगाया गया था लेकिन असल में जनता पर एक और बोझ था।
- **सरदार पटेल की भूमिका :** सरदार पटेल ने जनता को संगठित किया और समझाया कि यह टैक्स अन्यायपूर्ण है। उन्होंने लोगों को शांति और अनुशासन के साथ विरोध करने की प्रेरणा दी।
- **अहिंसक प्रतिरोध :** उन्होंने गाँव-गाँव जाकर लोगों को जागरूक किया। जनता ने टैक्स देने से इन्कार कर दिया लेकिन कहीं भी हिंसा नहीं होने दी।
- **सरकार की हार :** जनता की एकता और दृढ़ता के आगे अंग्रेज़ी सरकार को झुकना पड़ा और 'सुरक्षा टैक्स' वापस ले लिया गया।
- **प्रेरणा :** इस आंदोलन से सरदार पटेल ने यह दिखाया कि सत्य, साहस और एकता से हर जुल्म का जवाब दिया जा सकता है।

खेड़ा और बोरसद सत्याग्रह दोनों ही ऐतिहासिक घटनाएँ थीं और ये दोनों घटनाएँ भारतीय जनशक्ति की पहचान बन गईं। सरदार पटेल के नेतृत्व ने यह सिद्ध किया कि अहिंसा कोई कमज़ोरी नहीं बल्कि वह ताक़त है जो साम्राज्यों को झुका सकती है।

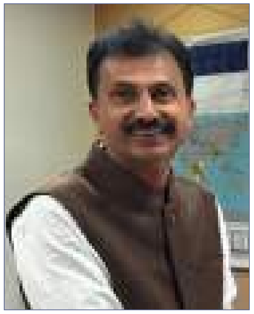

एम.जे. दिनेश
अध्यक्ष,
भारतीय कॉफी बोर्ड

कॉफी : भारत में निर्मित, दुनिया भर में प्रिय

कॉफी के साथ भारत का सफर चार शताब्दियों से भी अधिक पुराना है, जिसकी शुरुआत 17वीं शताब्दी में कर्नाटक के चिक्कमगलुरु की पहाड़ियों में हुई थी। समय के साथ, भारत दुनिया के उन गिने-चुने कॉफी उत्पादक देशों में से एक बन गया है जो पारम्परिक खेती और आधुनिक प्रसंस्करण को मिलाकर 'वाश्ड अरेबिका' और 'वाश्ड रोबस्टा', दोनों का उत्पादन करते हैं। आज ये अपने विशिष्ट स्वाद, ज़िम्मेदार खेती प्रणालियों तथा उत्पादकों, नवप्रवर्तकों और उद्यमियों के समृद्ध नेटवर्क के लिए जाना जाता है। भारत, केंद्रीय कॉफी अनुसंधान संस्थान (CCRI) में वैज्ञानिक कॉफी अनुसंधान और विकास की शताब्दी मना रहा है, और इस तरह देश की कॉफी की कहानी नए उद्देश्य और गौरव के साथ सामने आ रही है।

विशिष्टता

भारत की कॉफी मुख्य रूप से पश्चिमी घाट, जो यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल है, और पूर्वी घाट में उगाई जाती है। चेरी को हाथ से चुना जाता है और धूप में सुखाया जाता है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि केवल सर्वोत्तम चेरी ही संसाधित की जाएँ। पश्चिमी और पूर्वी घाटों की अनूठी जलवायु कप में हल्की अम्लता, स्वादिष्ट और मीठे मसालों से भरी सुगंध प्रदान करती है।

भारतीय कॉफी का उदयः वस्तु से गुण तक

दशकों तक, भारतीय कॉफी का निर्यात बड़े पैमाने पर थोक वस्तु के रूप में किया जाता था। वैश्विक विशिष्ट आंदोलन के उदय के साथ यह बदल गया, क्योंकि उपभोक्ताओं ने उत्पत्ति, प्रसंस्करण और जानकारी को महत्त्व देना शुरू कर दिया। भारत की छाया में मसालों और फलों के पेड़ों के साथ उगाई जाने वाली कॉफी स्वाभाविक रूप से इन अपेक्षाओं के अनुरूप है, जो पारिस्थितिक सामंजस्य, धीमी चेरी परिपक्वता और संतुलित तथा मिश्रित स्वाद प्रदान करती है। आज भारतीय कॉफी वैश्विक कपिंग कार्यक्रमों, विशेष रोस्टरों की अलमारियों और उच्च-प्रोफाइल बरिस्ता चैम्पियनशिप में शामिल है।

कर्नाटक से लेकर ओडिशा तक के किसान नई-नई प्रोसेसिंग तकनीकों पर प्रयोग कर रहे हैं। ये तकनीकें धुली हुई (washed) और प्राकृतिक (natural) प्रोसेसिंग से लेकर अत्याधुनिक 'एनाएरोबिक फर्मेंटेशन' (anaerobic fermentations) तक हैं। इस नए प्रयोग से भारतीय कॉफी को एक दमदार और आकर्षक स्वाद की पहचान मिल रही है। इस बदलाव के कारण भारत ने वैश्विक कॉफी मानचित्र पर अपनी एक विशेष जगह बना ली है और अब इसे एक उत्कृष्ट और सराहनीय कॉफी उत्पादक देश के रूप में पहचाना जा रहा है।

टेस्ट और टेरोइर का स्पेक्ट्रम

भारतीय कॉफी का आकर्षण इसकी विविधता में निहित है। यूनेस्को का विश्व धरोहर स्थल- पश्चिमी घाट, छाया में उगाई जाने वाली कॉफी के लिए एक आदर्श वातावरण प्रदान करता है। भारतीय कॉफी अपनी विविध किस्मों S795, SIn9, चंद्रगिरी, केंट्स, CxR के लिए भी अद्वितीय है, जिनमें से प्रत्येक एक अनूठी सुगंधित पहचान प्रदान करती है। भारत की रोबस्टा कॉफी की विशेष वैश्विक पहचान हैः कम कड़वाहट और माल्ट, चॉकलेट तथा मसाले के स्वाद वाली घनी फलियाँ, जिन्हें सामूहिक रूप से रोबस्टा कापी रॉयले के रूप में जाना जाता है। 'मैसूर

नगेट्स एक्स्ट्रा बोल्ड' जैसी अरेबिका कॉफी भारतीय शिल्प कौशल का उत्कृष्ट उदाहरण हैं। इन विशिष्टताओं में 'मानसून मालाबार' भी शामिल है, जो भारत की आविष्कारशील प्रसंस्करण परम्परा का प्रतीक है। मानसूनी हवाओं के सम्पर्क में आने पर, फलियाँ फूलकर हल्की अम्लता, गाढ़ेपन और स्ट्रॉ-कोकोआ के स्वाद वाले कप प्रोफाइल का निर्माण करती हैं। यह ऐसा स्वाद है जो पूरी तरह से भारत के लिए विशिष्ट है। हमारे देश के प्रधानमंत्री के शब्दों में, 'कॉफी की खेती ने स्वाद के अलावा, सम्मान और समृद्धि दोनों अर्जित की है।'

नवाचार और समावेशिता : कॉफी बोर्ड की उत्प्रेरक भूमिका

भारतीय कॉफी बोर्ड ने निर्यात को बढ़ावा देकर, बाजार प्रोत्साहन प्रदान करके और फ्लेवर ऑफ इंडिया – द फाइन कप अवाड्र्स और इंडिया इंटरनेशनल कॉफी फेस्टिवल जैसी पहलों के माध्यम से वैश्विक दृश्यता बढ़ाकर देश के कॉफी क्षेत्र को आगे बढ़ाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

ब्रांडिंग प्रयासों के साथ-साथ, बोर्ड इसरो-आधारित मानचित्रण और एकीकृत कॉफी विकास परियोजना का उपयोग करके नए क्षेत्रों में खेती का विस्तार कर रहा है, जो आंध्र प्रदेश, ओडिशा और पूर्वोत्तर जैसे क्षेत्रों में रोपण, गुणवत्तापूर्ण बुनियादी ढाँचे और पर्यावरण प्रमाणन का समर्थन करता है, जिससे अराकू, कोरापुट और नगालैंड के आदिवासी समुदायों को काफी लाभ हो रहा है। आत्मनिर्भर भारत की भावना को मजबूत करते हुए, SAMTFMACS और

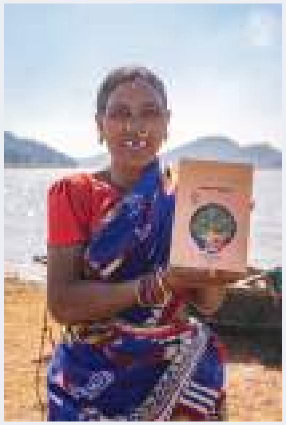

बायोटा कूर्ग FPC जैसे सफल सामूहिक मॉडल किसानों को स्थायी रूप से उत्पादन बढ़ाने और प्रीमियम बाजारों तक पहुँचने में सक्षम बनाते हैं। कॉफी शास्त्र, बरिस्ता कौशल प्रशिक्षण, PGDCQM और AIC-CCRI के अंतर्गत इनक्यूबेशन प्लेटफॉर्म के माध्यम से कौशल विकास एक प्रमुख केंद्र बिंदु बना हुआ है, जो फार्म-टू-कैफे मूल्य शृंखला में उद्यमिता और विशेषज्ञता को पोषित करता है।

आगे का रास्ता

भारत का कॉफी निर्यात 2024-25 में 1.80 बिलियन अमेरिकी डॉलर को पार कर गया है, जो लगातार चौथा वर्ष है जब यह 1 बिलियन अमेरिकी डॉलर के आँकड़े से ऊपर रहा है। अब 38 प्रतिशत निर्यात मूल्यवर्धित है और भारत इंस्टेंट कॉफी के लिए एक अग्रणी वैश्विक केंद्र के रूप में उभर रहा है, जिससे देश की प्रतिस्पर्धी स्थिति लगातार मजबूत हो रही है। मुक्त व्यापार समझौतों से बाज़ार पहुँच में और वृद्धि होने की उम्मीद है।

भविष्य की ओर देखते हुए, भारतीय कॉफी क्षेत्र विकसित भारत 2047 के विज़न द्वारा निर्देशित है, जिसके तहत भारत को पर्यावरण-अनुकूल, टिकाऊ, प्रीमियम कॉफी के उद्गम स्थल और एक महान कॉफी संस्कृति वाले देश के रूप में स्थापित करना है।

हमारे 'केंद्रीय कॉफी अनुसंधान संस्थान' के शताब्दी समारोह का विषय '7 लाख टन के शानदार भविष्य के लिए 7 बीज' भारतीय कॉफी को गुणवत्ता, नवाचार और पर्यावरणीय ज़िम्मेदारी का पर्याय बनाने की महत्त्वाकांक्षा को दर्शाता है।

भारतीय कॉफी की कहानी प्रकृति, ज्ञान और समुदाय के सामंजस्य में है। जैसे-जैसे दुनिया समृद्ध और अधिक सुगम कॉफी अनुभवों को अपना रही है, भारत न केवल एक उत्पादक के रूप में बल्कि संस्कृति, जैव विविधता, सशक्तीकरण और उत्कृष्टता से ओतप्रोत कॉफी कप पेश करने वाले के रूप में भी खड़ा है।

भारत में निर्मित, दुनिया द्वारा पसंद की जाने वाली कॉफी का यह सफर जारी है...!

कोरापुट कॉफी और इसका उत्तम मिश्रण

घाटों की ख़ुशबू

पूर्वी घाट की गोद में बसा ओडिशा का कोरापुट ज़िला, अपनी अरेबिका कॉफी की उम्दा सुगन्ध के कारण एक छिपा हुआ रत्न कहा जा सकता है। ये उच्च गुणवत्ता वाले दाने (बींस) धीरे-धीरे कॉफी प्रेमियों के बीच लोकप्रिय हो रहे हैं। मध्यम गाढ़ापन, बढ़िया स्वादानुभूति और फलों, चॉकलेट तथा मसालों के कोमल स्वाद वाली कोरापुट कॉफी, भारत की बेहतरीन विशिष्ट कॉफ़ियों में जगह बना चुकी है।

क्यों है विशेष?

कोरापुट की लगभग 3,000 फ़ुट की ऊँचाई, धुंध वाला मौसम और दोमट मिट्टी कॉफी की खेती के लिए आदर्श परिस्थितियाँ हैं। बींस के धीरे-धीरे पकने की प्रक्रिया हर दाने को और अधिक समृद्ध एवं जटिल स्वाद देती है। यहाँ की लहरदार पहाड़ियाँ और वनाच्छादित क्षेत्र इस इलाक़े की सुंदरता और प्राकृतिक संतुलन में चार चाँद लगाते हैं।

कॉफ़ी क्षेत्र की विशिष्ट परिस्थितियाँ

कोरापुट	सामान्य कॉफ़ी क्षेत्र
3000 फ़ुट	1500 से 2000 फ़ुट
ठंडी और धुँध वाली	गर्म और शुष्क
दोमट और उपजाऊ	रेतीली या पथरीली

परम्परा और निरंतरता का संगम

यहाँ के स्थानीय आदिवासी किसान, पारम्परिक और पर्यावरण-अनुकूल विधियों से कॉफ़ी उगाते हैं। कॉफ़ी के साथ ही, फलों के पेड़ और मसालों की खेती भी साथ-साथ की जाती है जिससे मिट्टी को पोषण और जैव विविधता को बढ़ावा मिलता है। पारम्परिक मिश्रित खेती का यह तरीक़ा औद्योगिक कॉफी फ़ार्मों से एकदम भिन्न है जो आमतौर पर एकल खेती पर निर्भर होते हैं।

क्यों बढ़ रही है विश्व भर में पहचान?

कोरापुट की अरेबिका कॉफी, ब्रुइंग की विभिन्न विधियों जैसे ऐस्प्रेसो, पोर-ओवर या फ्रेंच प्रेस के लिए उपयुक्त है। स्वाद ही नहीं इसके टिकाऊ (सस्टेनेबल) और निष्पक्ष व्यापार (फेयर-ट्रेड) मॉडल ने, दुनियाभर के नैतिक कॉफी ख़रीदारों का ध्यान आकर्षित किया है।

कॉफ़ी प्रेमियों का स्वर्ग

अगर आप नए स्वादों की खोज के साथ-साथ ज़िम्मेदार खेती के भी पक्षधर हैं तो आपके कप में कोरापुट कॉफ़ी का हक़ बनता है। अपनी अनोखी भौगोलिक परिस्थितियों, उगाने की पारम्परिक विधियों और निरंतरता के प्रति समर्पण के कारण कोरापुट धीरे-धीरे दुनिया के सबसे रोमांचक कॉफ़ी गंतव्यों में से एक बनता जा रहा है।

माँ भारती की वाणी

वंदे मातरम् के 150 वर्ष

भारत की आत्मा से उपजा गान

बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय (1838–1894) ने जब 'वंदे मातरम्' (जिसका अर्थ है– 'माँ, मैं तेरे समक्ष नतमस्तक हूँ') की रचना की, तब वे औपनिवेशिक दासता के बोझ से दबे भारत की पीड़ा का जवाब दे रहे थे। अपनी इन अमर पंक्तियों से उन्होंने राष्ट्र का आत्मविश्वास जगाने का प्रयास किया। 'वंदे मातरम्' मात्र एक काव्यात्मक रचना नहीं रही, यह एक 'प्रार्थना' बन गई। गुरुदेव रबीन्द्रनाथ ठाकुर ने इसे जब पहली बार सार्वजनिक रूप से गाया, तो इसकी शक्ति जन-जन में संचारित हुई। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान 'वंदे मातरम्' का नाद, आंदोलनों और क्रांतियों के नारों तथा स्वतंत्रता की आकांक्षा रखने वाले हर भारतीय के दिल में गूँजता रहा।

संघर्ष से शक्ति तक – एक अनंत गीत

स्वतंत्रता से पहले *'वंदे मातरम्'* प्रतिरोध का गीत था। इसने महात्मा गाँधी और सुभाष चंद्र बोस से लेकर अनेक अनाम वीरों तक, सभी नेताओं और क्रांतिकारियों को प्रेरित किया। इसकी गूँज गलियों, सभाओं और कारागारों में अक्सर सुनाई देती

थी। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद जहाँ *'जन गण मन'* राष्ट्रीय गान बना, वहीं *'वंदे मातरम्'* भारत का राष्ट्रीय गीत बनकर अमर है जो संघर्ष और स्वतंत्रता के बीच की निरंतरता का प्रतीक है।

विरासत का सम्मान

वर्ष 2025 एक दृष्टि से ऐतिहासिक पड़ाव कहा जा सकता है क्योंकि वंदे मातरम् की रचना के 150 वर्ष पूर्ण हुए हैं। इस महत्त्वपूर्ण अवसर को यादगार बनाने के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 7 नवम्बर, 2025 को वर्षभर चलने वाले उत्सव का शुभारम्भ करके इसे एकता, स्मरण और गर्व का उत्सव मनाने वाले राष्ट्रीय पर्व में बदल दिया। *'वंदे मातरम्'* के 150 वर्ष के इस समारोह का शुभारम्भ हमारी भावनाओं से जुड़ी ऐतिहासिक विरासत को एक नया स्वरूप प्रदान करता है। प्रधानमंत्री का आह्वान कि "हमें *'वंदे मातरम्'* के 150वें वर्ष को भी अविस्मरणीय बनाना है, हमें भावी

पीढ़ियों के लिए इन मूल्यों की धारा आगे बढ़ानी है" केवल स्मरण तक सीमित न रहते हुए इसे सक्रिय सहभागिता में रूपांतरित करने का आह्वान है।

इस अवसर पर प्रधानमंत्री ने स्मारक सिक्का और डाक टिकट भी जारी किए जो भारत की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक यात्रा पर 'वंदे मातरम्' की अमिट छाप का प्रतीक हैं। यह मूर्त प्रतीक सिक्के और डाक टिकट जब घर-घर पहुँचेंगे तो हर नागरिक इस साझी विरासत से जुड़ाव महसूस करेगा।

'वंदे मातरम्' के 150 वर्ष – वर्ष भर चलने वाले उत्सव के विभिन्न चरण

भारत सरकार ने राष्ट्रव्यापी सहभागिता और सांस्कृतिक आयोजन सुनिश्चित करने के लिए वर्ष भर चलने वाले कार्यक्रमों को चार प्रमुख चरणों में बाँटा है:

प्रथम चरण : 7–14 नवम्बर, 2025
द्वितीय चरण : 19-26 जनवरी, 2026
तृतीय चरण : 7-15 अगस्त, 2026
चतुर्थ चरण : 1-7 नवम्बर, 2026

VandeMataram150.in – जहाँ हर स्वर का है महत्त्व

डिजिटल युग को देखते हुए भारत सरकार ने एक अलग पोर्टल www.vandemataram150.in बनाया है। इस इंट्रैक्टिव डिजिटल मंच पर नागरिकों को आमंत्रित किया गया है कि वे *'वंदे मातरम्'* को अपने स्वर में एकल गान, समूहगान या वाद्य प्रस्तुति के रूप में अपलोड कर सकते हैं। प्रतिभागियों को इसके लिए डिजिटल प्रमाणपत्र भी दिए जाते हैं। यह पोर्टल ज्ञान का एक संग्रहालय भी है जहाँ *'वंदे मातरम्'* का इतिहास, अनुवाद, दुर्लभ दस्तावेज़

और इसके उद्‌भव व विकास से जुड़ी सामग्रियों का समृद्ध संकलन उपलब्ध है। इस पोर्टल पर इस गीत की दुर्लभ ऐतिहासिक ऑडियो रिकॉर्डिंग्स भी सुनी जा सकती हैं। वास्तव में, यह पोर्टल *'वंदे मातरम्'* के 150वें वर्ष को एक डिजिटल जनांदोलन में बदलता है जहाँ प्रत्येक भारतीय अपनी आवाज़ 'माँ भारती' को समर्पित कर सकता है।

भारत को एकजुट करने वाला गीत

वंदे मातरम् केवल अतीत का एक गीत भर नहीं है, यह तो भारत की सामूहिक हृदय की धड़कन और देशभक्ति की राष्ट्रीय चेतना की लय है। *'वंदे मातरम्'* के 150 वर्ष मनाते हुए हम केवल एक गीत का उत्सव नहीं मना रहे, बल्कि अपने राष्ट्र की महिमा को नमन कर रहे हैं। बंकिम चंद्र की लेखनी से लेकर स्वाधीनता सेनानियों की आवाज़ तक, समर्पण और एकता का इसका संदेश आज भी प्रेरणा देता है।

यह ऐतिहासिक पड़ाव स्मरण और नवोन्मेष का प्रतीक है; एक ऐसा आह्वान जो माँ भारती के प्रति प्रेम की हमारी भावना प्रोत्साहित करता है। आज भी जब हम *'वंदे मातरम्'* कहते हैं तो यह केवल एक उच्चारण भर नहीं अपितु मातृभूमि को शाश्वत नमन होता है– उन मूल्यों और आदर्शों के प्रति समर्पण जो भारत को अनंत और अमर बनाते हैं।

रूपा गुप्ता
प्रोफ़ेसर, वर्धमान
विश्वविद्यालय

'वंदे मातरम्' : स्वाधीनता का अचूक मंत्र

अधिकांश भारतीयों के लिए बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय (26 जून, 1838 – 8 अप्रैल, 1894) का परिचय केवल हमारे राष्ट्रगीत *वंदे मातरम्* के रचयिता के रूप में पर्याप्त है। अपनी मातृभूमि की ऐसी भावभीनी, संवेदनशील एवं ओजभरी वंदना भारतीय साहित्य में अनूठी है। इस अनुपम रचना की सम्पूर्णता केवल अपनी मातृभूमि की वंदना के रूप में नहीं बल्कि उसके कष्टों को दूर कर उसकी योग्य संतान के रूप में अपनी सार्थकता पाने में भी है।

बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय ने *वंदे मातरम्* गीत को अपने सर्वाधिक प्रसिद्ध उपन्यास *आनंदमठ* (1882) में सम्मिलित किया था, किन्तु इसकी रचना वे बहुत पहले कर चुके थे। यह एक रोचक तथ्य है कि बंकिमचंद्र ने *वंदे मातरम्* की गीत के रूप में रचना 1870 के दशक के आरम्भिक काल में की थी। *आनंदमठ* लिखे जाने तक यह उनकी मेज पर रखा रहा। आनंदमठ उपन्यास की कथावस्तु में यह संघर्षरत सेनानियों के कंठ से फूटा और इतना सटीक बैठा कि बंग-भंग के विरुद्ध स्वदेशी आंदोलन ने इसे हाथों-हाथ लिया। इस गीत के पहले शब्द 'वंदे मातरम्' की अनुपम ध्वन्यात्मकता ने इसे वह अद्भुत लोकप्रियता और स्थायित्व दिया जिसका साक्षी इतिहास रहा है।

वंदे मातरम् जैसे महामंत्र के सृष्टा बंकिमचंद्र के साहित्य में वह ओजतत्व प्रवाहित है जो उनकी परम्परा पर दृढ़ आस्था से अपना सत्व ग्रहण करता है। इसी ओज भाव का वे धर्म में समावेश करते हैं। उनके लिए धर्म वही है जो लोकहितकारी है। यह लोकहित सर्वसाधारण का हित है। किसी भी समाज का कल्याणकारी सत्य यही है। इसलिए वे 'कृष्णचरित्र' में कृष्णकथित धर्मतत्व में आचरणगत उच्चता का आदर्श सामने रखते हैं, आचारगत शुद्धता का नहीं। वे धर्म की उपयोगिता जातीय

धर्म के प्राणों की पुनः प्रतिष्ठा में मानते हैं। भारतवर्ष का मंगल इसी मार्ग से हो सकता है। इसीलिए *वंदे मातरम्* में उनका देश, उसकी वंदना माता के रूप में है। 'माँ पूजनीय है, धरती माँ भी वंदनीय है'। जन्मभूमि सबसे बढ़कर है। जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी। *वंदे मातरम्* गीत के भारतीय मानस में क्रांति लहर की तरह समा जाने के पीछे अपनी मातृभूमि से यही लगाव और सम्मान है।

यद्यपि बंकिमचंद्र का जातीयता बोध आज के भारतीयता बोध से तनिक भिन्न है, किन्तु 'भारत माता की जय' वस्तुतः *वंदे मातरम्* ही है। इस शब्द का जादू पूरे देश में तीव्रता से फैला क्योंकि यह संस्कृत का शब्द है। अतः पूरे देश द्वारा समझा गया। इसके सौंदर्य में वह बौद्धिक विचार भी था जिसमें मातृभूमि सर्वोपरि है। अपने देश को अपने से बढ़कर मानने का यह विचार आज डेढ़ सौ वर्षों बाद भी तेजोमय है। देशभक्ति के इस मंत्र की दीप्ति आगामी सदियों में इसी प्रकार जीवंत रहेगी। *वंदे मातरम्*

का इतिहास बताता है कि यह गीत अपने प्रचलन में आते ही अदम्य भाव से लोकप्रिय हो गया था। यह कांग्रेस के अधिवेशन में गाया गया था। लाला लाजपत राय ने लाहौर से वंदे मातरम् पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ किया था। तब तक कुछ जगहों पर मजिस्ट्रेट के आदेश पर इस गीत के सार्वजनिक गायन पर प्रतिबंध लगाया जा चुका था।

बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय ने अपने गीत 'वंदे मातरम्' का उपयोग अपने उपन्यास *आनंदमठ* में किया। मूल गीत में उन्होंने और पंक्तियाँ जोड़ीं। मूल गीत (12 पंक्तियाँ) अर्थात् कविता के आरम्भिक दो अंतरे कई वर्षों तक अनछुए पड़े रहे। अपने उपन्यास की जटिल भावना के लिए उन्होंने बाद में इस गीत में जो अंश जोड़ा, वही विवाद का विषय बना। ब्रिटिशों ने इसे 'मूर्तिपूजा' का जामा पहना कर इसका विरोध किया/करवाया, और भी बहुत से 'बुतपरस्ती' के विरोधी ख़ामख़्वाह इसके विरोधी हो गए। इसे साम्प्रदायिक जामा पहना दिया गया। एक अनुपम रचना षड्यंत्र का शिकार हो गई, किन्तु उसका दमन न किया जा सका। कवि ने जोड़ा –

तुमि विद्या, तुमि धर्म्म
तुमि हृदि तुमि मर्म्म
त्वं हि प्राणाः शरीरे
बाहुते तुमि माँ शक्ति
हृदये तुमि माँ भक्ति
तोमारि प्रतिमा गड़ि
मन्दिरे मन्दिरे।

कविता के उपरोक्त अंश में संस्कृत के संग अत्यंत सुंदर भाव से बंगला मिलाई गई है। उपन्यास *आनंदमठ* में नायक इस

अंश को गाता है। कविता के उत्तरार्ध को छोड़ दिया जाए तो प्रथमार्ध में तो माँ, मातृभूमि को दुर्बल मानने पर प्रश्न उठाया है। प्रथम आठ संस्कृत पंक्तियों के पश्चात बंकिमचंद्र लिखते हैं –

सप्तकोटी–कंठ–कल–कल–
निनाद–कराले
द्विसतकोटी–भुजै धृत–खरकरवाले,
अबला केन मा एत बले।
बहुबल–धारिणीं नमामि तारिणीं
रिपुदल–वारिणीं मातरम्।।

यहाँ सप्त कोटि कंठ के संबंध में यह उल्लेखनीय है कि बंकिमचंद्र ने सन 1872 की बंगाल की जनसंख्या का प्रयोग किया था जबकि उस समय भारत की जनसंख्या 30 करोड़ थी।

भाव, भाषा और शिल्प की इस अद्भुत कारीगरी से बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय ने उन लाखों हृदयों को छुआ जो निराशा के गर्त में डूबे हुए थे। इस गीत ने उनमें पुनः स्फूर्ति का संचार किया। बीसवीं सदी के प्रथम दशक के आरम्भ में ही देश ने नई करवट ली। देशवासियों ने इस गीत में वह प्राण–संचारिणी शक्ति पाई जो संघर्ष के संकटापन्न पथ पर उनकी सुदीर्घ साथिन थी। *वंदे मातरम्* पर उनका दृढ़ विश्वास कभी डिगा नहीं। कितने ही लोग इसे गाते–गाते फाँसी पर झूल गए। असंख्य राजनैतिक आघातों को सहते हुए *वंदे मातरम्* ने अपनी प्रेरणादायी ऊर्जा अक्षुण्ण रखी। काल बदले, परिस्थितियाँ बदलीं, लोग बदले, यहाँ तक कि देश लोकतंत्र में परिवर्तित हुआ तो मानस बदले किन्तु *वंदे मातरम्* ने भारत माता की उस ओजमयी संतानवत्सला आशादायिनी छवि को बदलने नहीं दिया। इसका स्थायित्व भारतीय जनमानस की वैचारिक एकता का साक्षी है।

वंदे मातरम्
एक ऐतिहासिक यात्रा

1875 (7 नवम्बर)

बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय ने पश्चिम बंगाल के चिन्सुरह में अक्षय नवमी के शुभ अवसर पर इसकी रचना की।

1882

उपन्यास 'आनंदमठ' में प्रकाशित हुआ।

1896

गुरुदेव रबीन्द्रनाथ ठाकुर ने इसे कलकत्ता में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशन में पहली बार सार्वजनिक रूप से गाया।

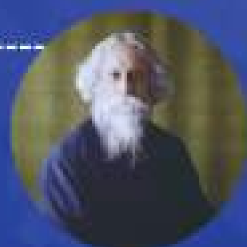

1905

बंगाल विभाजन के विरोध में स्वदेशी आंदोलन का प्रेरक गीत बना।

1907

मैडम भीकाजी कामा ने भारत से बाहर पहली बार बर्लिन के स्टटगार्ट में तिरंगा लहराया जिस पर वंदे मातरम् अंकित था।

1950

संविधान सभा ने इसे भारत के राष्ट्रीय गीत के तौर पर अपनाया

2005

देश भर में इसे स्वैच्छिक रूप से गाकर शताब्दी समारोह मनाया गया।

2025

वंदे मातरम् की 150वीं वर्षगाँठ।

वन्दे मातरम्।

सुजलाम् सुफलाम् मलय़जशीतलाम्,
शस्यश्यामलाम् मातरम्। वन्दे मातरम्।। 1।।

शुभ्रज्योत्स्ना पुलकितयामिनीम्,
फुल्लकुसुमित द्रुमदलशोभिनीम्,
सुहासिनीम् सुमधुरभाषिणीम्,
सुखदाम् वरदाम् मातरम्। वन्दे मातरम्।। 2।।

कोटि-कोटि कण्ठ कल-कल निनाद कराले,
कोटि-कोटि भुजैर्धृत खरकरवाले,
के बॉले माँ तुमि अबले,
बहुबलधारिणीं नमामि तारिणीम्,
रिपुदलवारिणीं मातरम्। वन्दे मातरम्।। 3।।

तुमि विद्या तुमि धर्म, तुमि हृदि तुमि मर्म,
त्वम् हि प्राणा: शरीरे, बाहुते तुमि माँ शक्ति,
हृदय़े तुमि माँ भक्ति, तोमारेई प्रतिमा गड़ि मन्दिरे-मन्दिरे।
वन्दे मातरम् ।। 4।।

त्वम् हि दुर्गा दशप्रहरणधारिणी,
कमला कमलदलविहारिणी,
वाणी विद्यादायिनी, नमामि त्वाम्,
नमामि कमलाम् अमलाम् अतुलाम्,
सुजलां सुफलां मातरम्। वन्दे मातरम्।। 5।।

श्यामलाम् सरलाम् सुस्मिताम् भूषिताम्,
धरणीम् भरणीम् मातरम्। वन्दे मातरम्।। 6।।

संस्कृत का पुनर्जागरण

प्राचीन भाषा में नई जान फूँकती युवा आवाज़ें

सुबह की हल्की धूप शहर की गलियों में उतर रही है। एक युवा मोबाइल कैमरा ऑन करता है, हाथ में बल्ला पकड़ता है और अचानक हवा को चीरती हुई एक आवाज़ सुनाई देती है– भ्रातः, नूतनं कन्दुकं गृह्णातु... (भाई, ये नई गेंद लो) और फिर बल्ले के स्वीट स्पॉट से गेंद के टकराने पर निकलने वाली टक-टक की सुरीली आवाज़ें कानों में रस घोलना शुरू कर देती हैं। इसी बीच वो अनोखे स्वर फिर से गूँज उठते हैं– इमं कन्दुकं सावधानेन पश्य, च षटकाय ताडय। (इस गेंद पर नज़रें जमाए रखो, और फिर एक ज़ोरदार छक्के के लिए हिट कर दो)

क्रिकेट और संस्कृत का यह अद्भुत संगम सिर्फ एक Reel नहीं है। यह नई पीढ़ी की उस बदलती हुई सोच का प्रतीक है जिससे संस्कृत भाषा फिर जीवित हो रही है। और यह युवक यश संजय सालुंके इस पुनर्जागरण के चमकते हुए चेहरों में से एक है।

सोशल मीडिया की बदलती दुनिया ने संस्कृत को एक नया जीवन, नई आत्मा और नई पहचान दी है। युवा कंटेंट क्रिएटर आज इस भाषा को संवाद, शिक्षा, संगीत, हास्य और

"भारत में क्रिकेट केवल एक खेल नहीं अपितु धर्म है। वैसे ही संस्कृत हमारी अविस्मृत संस्कृति की आत्मा है। जैसे क्रिकेट प्रत्येक भारतीय के रुधिर में दौड़ता है, वैसे ही संस्कृत भी प्रत्येक भारतीय के रुधिर में दौड़ती है। इसलिए मैंने विचार किया कि क्यों न मैं राष्ट्र के दो प्रमुख स्तम्भों को जोड़कर एकता की भावना को दृढ़ करूँ। इसी राष्ट्रीय एकता के विचार ने संस्कृत तथा क्रिकेट को संयोजित करने के लिए मुझे प्रेरित किया।"

-यश संजय सालुंके

कला, हर रूप में पुनर्जीवित कर रहे हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 'मन की बात' में ऐसे कई युवाओं का ज़िक्र किया है जो संस्कृत के इस नए सफ़र को आगे ले जा रहे हैं। आज Reels के माध्यम से संस्कृत में बोलना, गाना और यहाँ तक कि हँसी-मज़ाक करना भी नया ट्रेंड बन चुका है।

यश संजय सालुंके ने क्रिकेट को संस्कृत में वर्णित करते हुए जो वीडियो बनाया, वह कुछ सेकंड में वायरल हो गया।

यश का यह दृष्टिकोण बताता है कि संस्कृत आधुनिक मनोरंजन और खेलों में

भी अपनी जगह बना सकती है। उनकी Reels में संस्कृत का लयात्मक सौंदर्य और क्रिकेट का जोश दोनों का समन्वय युवाओं को बेहद आकर्षित कर रहा है।

हास्य में छिपी विद्या

यश जैसे युवाओं की बदौलत, जहाँ संस्कृत की गूँज खेल के मैदानों में सुनाई दे रही है, वहीं राजशेखर श्रीशैल विभूते उसे हास्य के माध्यम से घर-घर पहुँचाने का काम कर रहे हैं। उनके Instagram चैनल पर लाखों लोग संस्कृत में बने हास्य वीडियो देखते हैं। उनका मानना है कि संस्कृत को सरल बनाना इसकी लोकप्रियता की कुंजी है।

उनके वीडियोज़ यह साबित करते हैं कि हल्के-फुल्के अंदाज़ में हँसते-

"संस्कृत एक समृद्ध और प्राचीन भाषा है। मैंने युवाओं को इस प्राचीन भाषा से जोड़ने के लिए हास्य को एक मार्ग के रूप में चुना ताकि यह केवल एक पुस्तकीय भाषा न रहकर हास्य अभिव्यक्ति के माध्यम से सभी के जीवन का अंग बने। संस्कृत के कठिन विषयों को सहज रूप से प्रस्तुत करते हुए हर एक के हृदय तक सरलता से पहुँचा जा सकता है। आज युवाओं से लेकर बुजुर्गों तक सभी सोशल मीडिया पर एक्टिव हैं। आज हम जो बीज बो रहे हैं, भविष्य में यह बड़े पेड़ के रूप में सभी को फल देंगे।"

-राजशेखर श्रीशैल

"हमारी वर्तमान पीढ़ी को तार्किक और वैज्ञानिक व्याख्या चाहिए। जैसे हम मंदिर क्यों जा रहे हैं? यह मेटल क्यों पहन रहे हैं? हम साधना क्यों करते हैं? हम कोशिश कर रहे हैं कि यह सब कुछ सरल और तार्किक ढंग से प्रस्तुत करें। जैसे महर्षि पतंजलि, जैसे वेद और उपनिषद्, जहाँ सब कुछ सरल भाषा में मौजूद है। हम कुछ नया नहीं पढ़ा रहे हैं। हम बस ऋषियों के ज्ञान को सरल भाषा में प्रस्तुत कर रहे हैं।"

-भावेश भीमनाथानी

हँसाते हुए भी कोई भाषा आम ज़िंदगियों में आसानी से उतर सकती है।

आध्यात्मिकता की सरल व्याख्या

इस अनोखे संस्कृत पुनर्जागरण का एक और चेहरा हैं भावेश भीमनाथानी, जो संस्कृत श्लोकों, दर्शन और आध्यात्मिक सिद्धांतों को बेहद आसान भाषा में आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण से समझाते हैं। आज की पीढ़ी हर चीज़ का 'क्यों?' जानना चाहती है। भावेश इन्हें सरल और तार्किक भाषा में समझाते हैं।

भावेश की लोकप्रियता यह दर्शाती है कि संस्कृत आज भी दिल और दिमाग़ दोनों तक पहुँच सकती है, अगर उसे सही अंदाज़ में पेश किया जाए।

नए ज़माने का संस्कृत पुनर्जागरण

इन युवाओं की कहानी सिर्फ प्रेरक नहीं बल्कि प्रमाण है कि संस्कृत भाषा अब अपनी नई यात्रा पर निकल चुकी है। सोशल मीडिया ने इस भाषा को मोबाइल स्क्रीन और पॉप कल्चर का हिस्सा बना दिया है। चाहे क्रिकेट हो, चाहे हास्य या अध्यात्म, आज के युवा इस भाषा को अपनी रोज़मर्रा की दुनिया में इस्तेमाल कर रहे हैं। इसका सीधा अर्थ यह है कि संस्कृत अब 'जीवंत भाषा' बन रही है।

भाषा सभ्यता की वाहक होती है। हज़ारों वर्षों तक संस्कृत ने यह दायित्व निभाया। आज जब नई पीढ़ी फिर से इसे अपना रही है, तो यह सिर्फ भाषा का पुनर्जन्म नहीं है बल्कि एक संस्कृति का पुनर्जागरण है। इस भाषा में शब्दों का गणित है, ध्वनि की ऊर्जा है, ज्ञान का महासागर है और अभिव्यक्ति की अनंत क्षमता। प्रधानमंत्री द्वारा इन युवा प्रयासों की सराहना इस आंदोलन को और गति दे रही है।

जुएल ओराम
केंद्रीय मंत्री,
जनजातीय कार्य मंत्रालय

कोमाराम भीम और भगवान बिरसा मुंडा की विरासत को नमन

भारत के स्वतंत्रता संग्राम की कहानियाँ प्रायः महान नेताओं और आंदोलनों के माध्यम से बताई जाती रही हैं लेकिन कोमाराम भीम और भगवान बिरसा मुंडा जैसे जनजातीय नायकों के साहसिक योगदान भी उतने ही महत्त्वपूर्ण हैं। उनका जीवन साहस, संघर्ष और अपने लोगों के लिए न्याय एवं सम्मान के प्रति अटूट समर्पण का प्रतीक था। जनजातीय गौरव दिवस के अवसर पर हमें उनके उन आदर्शों और विरासत का चिंतन करना चाहिए जिसके प्रति वे अडिग रहे।

कोमाराम भीमः विद्रोह एवं अधिकारों के प्रतीक

हैदराबाद में निज़ाम के दमनकारी शासन के विरुद्ध कोमाराम भीम का संघर्ष केवल एक स्थानीय विद्रोह नहीं था। यह तो जनजातीय समुदायों में न्याय और आत्मसम्मान के लिए एक व्यापक लड़ाई का प्रतीक था। उस दौर में जब शोषण चरम पर था और सत्ता के विरुद्ध बोलना तक अपराध माना जाता था, तब भीम ने निडर होकर अपने लोगों की रक्षा के लिए आवाज़ उठाई। उनका आंदोलन इस विश्वास पर आधारित था कि प्रत्येक व्यक्ति को अत्याचार और अन्याय से मुक्त होकर सम्मान से जीने का अधिकार है।

कोमाराम भीम का दिया नारा **'जल, जंगल, ज़मीन'** आज भी जनजातीय पहचान और अधिकारों की सशक्त अभिव्यक्ति है। ये तीनों तत्त्व, केवल संसाधन नहीं अपितु जनजातीय समुदायों की जीवनरेखा हैं जो उनकी संस्कृति, आजीविका और अस्तित्त्व से गहरी जुड़ी हैं। इन संसाधनों पर भीम की स्वायत्तता की माँग एक ऐसा सिद्धांत था जो आज भी पर्यावरणीय न्याय और आदिवासी अधिकारों की समकालीन चर्चाओं का केंद्र रहता है।

नेतृत्व की उनकी शैली अत्यंत लोकतांत्रिक थी। भीम ने ग्राम सभाएँ बनाकर लोगों को संगठित किया और इस बात पर बल दिया कि शासन व्यवस्था का आधार, स्थानीय परम्पराएँ और निर्णय की प्रक्रिया में सहभागिता हो। स्व-शासन की उनकी यह दृष्टि अपने समय से कहीं आगे की

थी जिसमें आज की विकेन्द्रीकृत शासन की आकांक्षाएँ प्रतिबिम्बित होती हैं।

भगवान बिरसा मुंडाः जनजातीय जागरण के पुरोधा

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में भगवान बिरसा मुंडा का आंदोलन, भारत के स्वतंत्रता संग्राम में मील का एक पत्थर था। उस समय जब औपनिवेशिक नीतियों ने पारम्परिक जनजातीय जीवन अस्त-व्यस्त कर दिया था, भगवान बिरसा ने अपने लोगों को शोषण और अन्याय के विरुद्ध संगठित किया। उनकी दृष्टि केवल प्रतिरोध तक सीमित नहीं थी, वे तो समानता, स्वशासन

और आध्यात्मिक जागरण पर आधारित समाज चाहते थे।

बिरसा मुंडा का **उल्गुलान (महान आंदोलन)** केवल ब्रिटिश अत्याचार के विरुद्ध विद्रोह नहीं, बल्कि सामाजिक सुधार और सशक्तीकरण का आह्वान भी था। उन्होंने अपने लोगों से शोषक ज़मींदारों और मिशनरियों को चुनौती देते हुए अपनी पारम्परिक आस्था और रीति-रिवाजों की ओर लौटने को कहा। स्वशासन और सांस्कृतिक गौरव पर उनका बल आज भी जनजातीय कल्याण और समावेश से सम्बद्ध नीतियों को दिशा देता है।

बिरसा मुंडा के आदर्शों ने स्वतंत्रता सेनानियों की पीढ़ियों को प्रेरित किया और भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में जनजातीय स्वाभिमान की नींव रखी। उनका जीवन हमें यह याद दिलाता है कि सशक्तीकरण केवल राजनीतिक नहीं बल्कि सांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक भी होता है।

समानताओं की झलकः स्वशासन और सशक्तीकरण

यद्यपि कोमाराम भीम और भगवान बिरसा मुंडा के बीच काल और भौगोलिक दूरी थी पर दोनों का सपना एक ही था; एक ऐसा समाज जहाँ जनजातीय समुदाय सम्मान से जी सकें और अपने संसाधनों पर उनका अपना अधिकार हो। दोनों नेताओं ने उन व्यवस्थाओं के खिलाफ़ संघर्ष किया जिन्होंने उन्हें उनकी ज़मीन और आजीविका पर स्व-नियंत्रण से वंचित किया। उनका संघर्ष न्याय, समानता और सशक्तीकरण के सिद्धांतों पर आधारित था जो **सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास** के दृष्टिकोण के काफ़ी निकट है।

भीम का नारा **'जल, जंगल, ज़मीन'** और बिरसा मुंडा का **उल्गुलान** एक ही सिक्के के दो पहलू थे- जनजातीय समुदायों को पहचान और स्वशासन की माँग। दोनों का मानना था कि आर्थिक

आज़ादी और सांस्कृतिक अखंडता के बिना पूर्ण स्वतंत्रता अधूरी है। आज यही आदर्श, **पंचायती राज का विस्तार** और **वन अधिकार अधिनियम** लागू करने के हमारे प्रयासों में देखे जा सकते हैं जो जनजातीय समुदायों को अपने संसाधनों के उपयोग के प्रति सशक्त करते हैं।

दोनों ही नायकों का मानना था कि एकजुट होने में ही असली ताक़त है। भीम का प्रतिरोध और बिरसा मुंडा का लोगों को संगठित करना, इसी सामुदायिक एकजुटता में निहित था- एक ऐसा सिद्धांत जो समावेशी विकास के लिए आज भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है। उनका जीवन हमें सिखाता है कि सशक्तीकरण मिलता नहीं है, इसे एकता, जागरूकता और संघर्षशीलता से अर्जित किया जाता है।

जनजातीय गौरव दिवस का महत्त्व

जनजातीय गौरव दिवस केवल औपचारिकता भर नहीं है; यह राष्ट्रनिर्माण में जनजातीय समुदायों के योगदान और उसके सम्मान के प्रति हमारी प्रतिबद्धता

भी है। यह अवसर युवाओं को उन नायकों के बारे में जानकारी देने का भी है जिनके बलिदान किसी भी अन्य स्वतंत्रता सेनानी से कम महत्त्वपूर्ण नहीं हैं। उनकी विरासत को सम्मानित करके हम भारत की पहचान रही विविधता में एकता को मज़बूत करते हैं।

युवाओं को सन्देश

भारत के युवाओं से मैं यही कहूँगा कि वे कोमाराम भीम और भगवान बिरसा मुंडा के साहस और दृढ़ विश्वास से प्रेरणा लें। उनका जीवन हमें सिखाता है कि सच्चा नेतृत्व, कठिनाइयों के बावजूद न्याय के लिए खड़े रहने में है। तेज़ गति से बदलाव के इस युग में हमें याद रखना चाहिए कि समावेशी सोच, निरंतरता और प्रकृति के प्रति सम्मान से ही विकास होता है। आइए, हम उनकी समानता और सशक्तीकरण की दृष्टि आगे बढ़ाने का संकल्प लें ताकि देश की प्रगति में हर समुदाय की हिस्सेदारी हो।

मन की बात

प्रतिक्रियाएँ

कार्रवाई के लिए आह्वान

127वाँ संस्करण

मैं आप सभी से आग्रह करता हूँ कि 31 अक्तूबर को सरदार साहब की जयंती पर पूरे देश में आयोजित होने वाली 'Run For Unity' में भाग लें और सिर्फ अकेले ही नहीं, बल्कि दूसरों के साथ भी इसमें भाग लें।

मैं चाहूँगा कि हम सभी देशवासी 'वंदे मातरम्' को बढ़ावा देने के लिए सहज भावना से प्रयास करें। कृपया मुझे #VandeMatram150 के साथ अपने सुझाव भेजें। #VandeMatram150

मैं जिस महान व्यक्ति की बात कर रहा हूँ, वह कोमाराम भीम हैं। मैं युवाओं से आग्रह करता हूँ कि वे उनके बारे में जितना हो सके उतना जानने की कोशिश करें।

भगवान बिरसा मुंडा और कोमाराम भीम की तरह, हमारे आदिवासी समुदायों में कई और महान हस्तियाँ हुई हैं। मैं आपसे आग्रह करता हूँ कि आप उनके बारे में ज़रूर पढ़ें।

हमें भी जहाँ भी रहते हैं, पेड़ लगाने चाहिए। हमें 'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान को और बढ़ावा देने की ज़रूरत है।

सरदार साहब
को श्रद्धांजलि

भारत की कॉफी,
हर घूंट
लाजवाब!

The spirit of 'Vande Mataram' is connected to the immortal consciousness of India: PM Modi in Mann Ki Baat
NEWS UPDATES
MANN
BAAT
In this month's Mann Ki Baat address, PM Modi paid tribute to Sardar Patel on his 150th birth anniversary on October 31. He also touched upon interesting topics such as Chhath Puja festival, Environmental protection, Indian dog breeds, Indian coffee, Tribal community leaders and the importance of Sanskrit language. The PM made a special mention of 150th year of 'Vande Mataram' song.

वंदे मातरम्

COFFEE BOARD
GOVT. OF INDIA
KORAPUT

समाज के लिए प्रेरणा
प्रधानमंत्री जी का संदेश

Koraput
Coffee
ओडिशा का
गर्व!

छठ घाटों पर हर वर्ग का खड़ा होना सामाजिक एकता का बेहतरीन उदाहरण

Modi hails Chhath unity, Op Sindoor

Says festivals more vibrant after Op Sindoor success, steps curbing Maoist menace

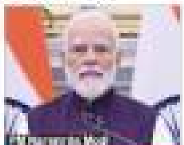

Celebrate 150 years of 'Vande Mataram'

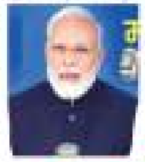

छठ महापर्व संस्कृति, प्रकृति व समाज के बीच गहरी एकता का प्रतीक: मोदी

Op Sindoor has added to joy in festive season: PM

PM hails Indian coffee amid surge in exports

स्वदेशी सामानों से त्योहारों में नई रौनक : मोदी

मन की बात

प्लास्टिक कचरे के बदले भोजन देने वाली कैफे को देश में मिली पहचान

मन की बात • प्रधानमंत्री की जनता से अपील

नवंबर में वंदे मातरम् के 150 साल, इसे यादगार बनाएं: मोदी

प्रधानमंत्री ने भारतीय नस्ल के कुत्तों की तारीफ की

प्रधानमंत्री मोदी ने 'मन की बात' में देशवासियों को किया संबोधित

चाय के साथ मेरा जुड़ाव तो जगजाहिर, 'ओडिशा के गौरव' को सराहा, भावनाओं को भी बताया

'मन की बात' में खास कॉफी पर भी बोले

कार्यक्रम के 127 एपिसोड में देशवासियों से संवाद किया

कई तथ्यों के साथ जनता से किया संवाद

नौकरी छोड़, कॉफी की खेती में लग गए

वंदेमातरम 150वें वर्ष में कर रहा प्रवेश, देश के लिए उत्सव का वक्त

PM remembers Komaram Bheem in 'Mann Ki Baat'

PM praises forces for desi dog induction

କୋରାପୁଟ କଫିକୁ ପ୍ରଧାନମନ୍ତ୍ରୀଙ୍କ ପ୍ରଶଂସା

'મન કી બાત'ના ૧૨૭મા એપિસોડમાં વડાપ્રધાન મોદીએ દેશવાસીઓને તહેવારોની શુભેચ્છા પાઠવી

GST બચત ઉત્સવને માટે લોકોમાં ભારે ઉત્સાહ : મોદી

नरेंद्र मोदींच्या 'मन की बात'मध्ये छठ पूजा आणि 'वंदे मातरम्'चा विशेष उल्लेख

स्वदेशी खरेदीमुळे अर्थव्यवस्थेत नवा उत्साह

मन की बात की 127 वीं कड़ी को किया संबोधित

रन फॉर यूनिटी में भाग लें देशवासी: मोदी

सोशल मीडिया संस्कृत को दे रहा है नयी प्राणवायु

'मन की बात' में पीएम मोदी ने छठ से लेकर वंदे मातरम तक की चर्चा

ऑपरेशन सिंदूर से हर भारतीय गौरवान्वित : पीएम

सोशल मीडिया संस्कृत को दे रहा नई प्राणवायु : मोदी

Op Sindoor, eradication of naxalism added colour to festivals: PM Modi

abp न्यूज़

'छठ पर्व सामाजिक एकता का सबसे सुंदर उदाहरण', मन की बात में बोले पीएम मोदी

अमर उजाला

'गार्बेज कैफे' को मिली राष्ट्रीय पहचान: प्रधानमंत्री मोदी ने 'मन की बात' में की अंबिकापुर की पहल की सराहना

भारत EXPRESS

Mann Ki Baat: پی ایم مودی نے ہندوستانی نسل کے کتوں کے متعلق کی بات، انڈین بریڈ کو اپنانے پر دیا زور

The Tribune

PM Modi Mann Ki Baat : 150 साल वंदे मातरम के, पीएम मोदी बोले- हर भारतवासी गाए देशभक्ति का ये गीत

THE FORTUNE INDIA

GST Bachat Utsav sees strong response; PM hails local innovations in Mann Ki Baat

THE FREE PRESS JOURNAL

'Indian Coffee Becoming Globally Popular, Driven By Diverse Varieties Grown In Karnataka, Tamil Nadu & Kerala': PM Modi

हिन्दुस्तान

प्रधानमंत्री मोदी के 'मन की बात' कार्यक्रम में स्वदेशी, पर्यावरण और एकता पर जोर

INDIA TV

Mann Ki Baat: 'Reflects deep unity of culture and nature,' PM Modi extends greetings on Chhath

The Indian EXPRESS

In Mann Ki Baat, PM Modi urges everyone to commemorate 150 years of Vande Mataram

NDTV

युवाओं को 'संस्कृत' में क्रिकेट सिखा रहे यश सालुंके को पीएम मोदी ने 'मन की बात' में सराहा

THE ECONOMIC TIMES

Koraput Coffee truly delectable, pride of Odisha: PM in 'Mann Ki Baat'

THE HINDU

Bengaluru engineer finds mention in PM Modi's 'Mann ki baat' for lake rejuvenation

THE NEW INDIAN EXPRESS

Komaram Bheem continues to inspire people, says Modi

The Statesman

PM Modi pays tributes to Sardar Patel in 'Mann Ki Baat'; praises his towering personality

THE TIMES OF INDIA

PM Narendra Modi praises Chhattisgarh's 'Garbage Café' initiative in Mann Ki Baat

मन की बात

के सभी संस्करणों को पढ़ने के लिए
QR कोड को स्कैन करें।

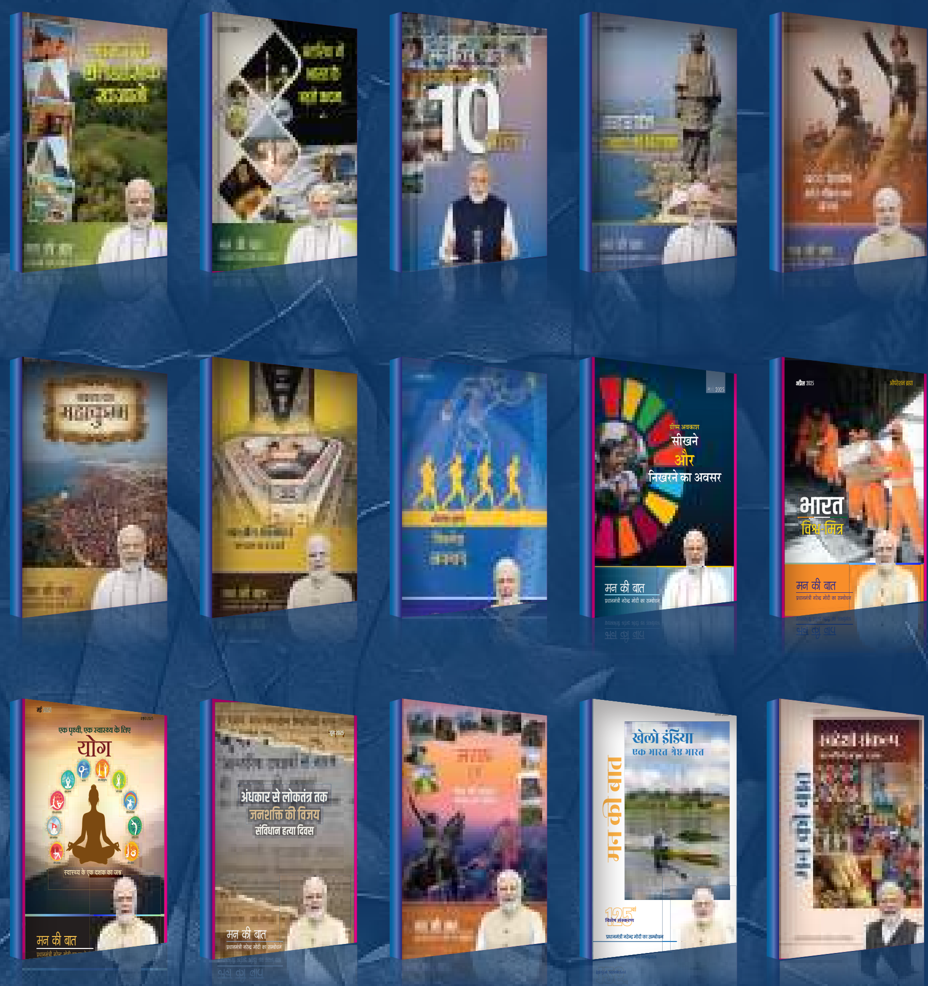

‘वन्देमातरम्’ के गान में करोड़ों देशवासियों ने हमेशा राष्ट्र प्रेम के अपार उफान को महसूस किया है। हमारी पीढ़ियों ने ‘वन्देमातरम्’ के शब्दों में भारत के एक जीवंत और भव्य स्वरूप के दर्शन किए हैं।

सुजलाम्, सुफलाम्, मलयज शीतलाम्,
शस्यश्यामलाम्, मातरम्!
वंदे मातरम्!

-माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

सत्यमेव जयते

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार